बुंदेल भारती
प्रवेशिका
साक्षरता निकेतन प्रकाशन

बुंदेल भारती

प्रवेशिका

राज्य संदर्भ केन्द्र
साक्षरता निकेतन
लखनऊ–226005 (उ० प्र०)

Bundel Bharti

बुंदेल भारती

रचना मण्डल

डॉ० एन.के. सिंह

लीलाधर शर्मा पर्वतीय

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

भवानी शंकर उपाध्याय

डॉ०ओम प्रकाश शर्मा

यमुना प्रसाद त्रिपाठी 'धार'

श्याम लाल

विश्वनाथ सिंह

आवरण एवं कला पक्ष

स्क्रीन प्रिंटिंग इकाई, साक्षरता निकेतन, लखनऊ

प्रकाशक

राज्य संदर्भ केन्द्र,

साक्षरता निकेतन,

लखनऊ - 226005

प्रथम संस्करण

फरवरी - 1987

द्वितीय संस्करण

फरवरी - 1988

तृतीय संस्करण

जनवरी - 1989

मुद्रक

वर्धन प्रिंटर्स

94, महात्मा गांधी मार्ग लखनऊ - 226001

इस प्रवेशिका के सम्बन्ध में

प्रौढ़ शिक्षा के नीति-वक्तव्य में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि प्रौढ़ों के लिए निर्मित पाठ्यक्रम एवं तत्सम्बन्धी पठन-पाठन सामग्री प्रौढ़ के जीवन और उसकी आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक प्राथमिकताओं पर आधारित हो। साक्षरता निकेतन ने अपनी साधन-सीमाओं के अंतर्गत उपर्युक्त मूल भावना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के साहित्य का निर्माण किया है। इसमें निकेतन द्वारा प्रकाशित मूल साक्षरता सामग्री के सेट विशेष उल्लेखनीय हैं। ये सेट विशिष्ट एवं सामान्य लक्ष्य-समूहों के लिए विभिन्न साक्षरता पद्धतियों तथा केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों की प्राथमिकताओं के आधार पर निर्मित किए गए हैं।

अभी कुछ समय पहले निकेतन ने उत्तर प्रदेश के पर्वतीय अंचलों के लिए 'पर्वत भारती' प्रवेशिका तथा तत्सम्बन्धी मूल साक्षरता सामग्री का निर्माण किया था। प्रौढ़ शिक्षा में संलग्न भाषा- शास्त्रियों और विद्वानों ने पद्धति एवं विषय-चयन की दृष्टि से इस सामग्री की विशेष प्रशंसा की। वर्तमान शिक्षा सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार श्री जगदीश चन्द्र पंत ने इस सामग्री के साँचे पर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल तथा बुन्देलखण्ड अंचलों के लिए विशेष साक्षरता सामग्री निर्मित करने की आकाँक्षा व्यक्त की। सच तो यह है कि यह आकाँक्षा पूर्वांचल एवं बुन्देलखण्ड के लिए विशिष्ट सामग्री बनाने की सबल प्रेरणा बनी। एतदर्थ हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। उत्तर प्रदेश अपने क्षेत्रफल, जनसंख्या, सामाजिक परिवेश, भौगोलिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ऐसे विविध रंगों वाला है कि उसके लिए विशेष लक्ष्य-समूहों पर आधारित शिक्षण-सामग्री की सार्थकता अधिक है।

निकेतन ने बुन्देलखण्ड अंचल के लिए मूल साक्षरता सामग्री के निर्माण हेतु माता टीला, ललितपुर में 5 से 12 नवम्बर, 1986 तक कार्यशाला आयोजित की। इसमें 'बुन्देल भारती' प्रवेशिका, अभ्यास पुस्तिका, शिक्षक निर्देशिका तथा तत्सम्बन्धी चार्टों की रूपरेखा तैयार की गयी। इस शिविर में प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं शिक्षाविद् श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, श्री निरंजन कुमार सिंह, जामिया मिलिया, दिल्ली के डॉ० जयपाल सिंह 'तरंग', श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' तथा डॉक्टर (कु०) मधु माहेश्वरी का विशेष सहयोग रहा। प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय की ओर से सर्वश्री राम भरोसे, भवानी शंकर उपाध्याय, डॉ० ओम प्रकाश शर्मा 'अश्वघोष', कु० ललित-प्रभा जोशी, श्री गया प्रसाद, श्रीमती नैली जोजेफ, श्री अरुण कुमार सरावगी, डॉ० देवेन्द्र सिंह, श्री के० एन० जौहरी तथा श्री मैथली शरण स्वर्णकार ने अपने सहयोगियों सहित सक्रिय सहयोग दिया। निकेतन के सहयोगियों- सर्वश्री यमुना प्रसाद त्रिपाठी 'धार', श्याम लाल, के० जी० सिंह, राजेन्द्र श्रीवास्तव, मदन सिंह तथा विश्वनाथ सिंह ने बड़ी तत्तपरता से इस कार्य को सफल बनाया।

इस सामग्री की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं :

* यह पूर्ण रूप से लक्ष्य समूह के स्थानीय परिवेश से जुड़ी है।
* प्रौढ़ शिक्षा के तीनों आयाम (साक्षरता, चेतना जागृति एवंव्यावसायिक दक्षता) इस सामग्री के माध्यम से पूरे किए जा सकते हैं।
* इस सामग्री के निर्माण में स्थानीय विषय-विशेषज्ञों, भाषा-शास्त्रियों, विभागीय अधिकारियों तथा प्रौढ़ प्रतिनिधियों का सम्यक् प्रतिनिधित्व हुआ है।
* सामग्री का चित्रांकन एवं पठन-अभ्यासों का लेखन स्थानीय परिवेश में संभव हो सका है।
* सामग्री की रचना के साथ ही इसका पूर्व परीक्षण भी चलता रहा है। विषय, भाषा पद्धति एवं लक्ष्य-समूह की विशेषताओं संबन्धी सारे सुझावों, संशोधनों एवं परीक्षणों का अंतिम रूप है यह प्रवेशिका।

मुझे विश्वास है कि निकेतन द्वारा निर्मित अन्य मूल साक्षरता सामग्री प्रकाशनों की भाँति ही इस विशेष सामग्री का भी समुचित उपयोग होगा।

गणेश शंकर चौधरी

निदेशक,

साक्षरता निकेतन, [illegible]

द्वितीय संस्करण

'बुंदेल भारती' के इस संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता है। इसका प्रथम संस्करण फरवरी, 1987 में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों, क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं तथा राज्य सरकार के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों से अनेक उपयोगी सुझाव प्राप्त होते रहे हैं।

अभी तक इस प्रवेशिका से संबन्धित अभ्यास पुस्तिका और शिक्षक निर्देशिका अलग-अलग थी। किन्तु प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर प्रयुक्त पठन-पाठन की क्रियाविधि के आधार पर यह अनुभव किया गया कि बहुधा अनुदेशकों द्वारा शिक्षक निर्देशिका का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। इस कारण शिक्षण-प्रक्रिया उतनी प्रभावी नहीं हो पा रही है, जितनी अपेक्षित है।

इस स्थिति पर विचार-विमर्श करने के लिए साक्षरता निकेतन में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं, राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों तथा प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों की एक कार्य गोष्ठी आयोजित की गयी। इस गोष्ठी में राज्य के प्रौढ़ शिक्षा निदेशक श्री ईश्वर शरण गौड़ ने यह सुझाव दिया कि प्रवेशिका के प्रस्तुत संस्करण में अभ्यास पुस्तिका तथा शिक्षक निर्देशिका का भी समावेश कर लिया जाए। इससे अनुदेशकों को चर्चा के लिए विषय-सामग्री, पठन-विधि, प्रवेशिका की पाठ्य सामग्री तथा अभ्यास एक साथ सुलभ रहेंगे और वे इसका सार्थक तथा प्रभावपूर्ण उपयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।

इस सुझाव की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर प्रवेशिका का यह प्रायोगिक संस्करण प्रस्तुत किया गया है। आशा की जाती है कि इससे साक्षरता प्रदान करने के साथ-साथ प्रौढ़ शिक्षा के अन्य आयामों- चेतना जागृति तथा व्यावसायिक दक्षता का लक्ष्य प्राप्त करने में भी सहायता मिलेगी।

इस संस्करण में चर्चा के बिंदुओं तथा उनसे संबन्धित सामग्री में भी यथोचित संशोधन किए गए हैं। संशोधन और परिवर्द्धन के समय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के केन्द्रीय पाठ्यक्रम में समाविष्ट विषयों, यथा, राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक धरोहर, समतावादी समाज, सर्व धर्म समभाव, जनसंख्या-शिक्षा, पर्यावरण, नर-नारी समानता, रूढ़ियों और अंध-विश्वासों का विरोध, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास आदि प्रसंगों को अधिक उजागर किया गया है।

सम्पूर्ण वर्ण माला का ज्ञान कराने के बाद उसके अभ्यास और पढ़ने-लिखने की क्षमता वृद्धि के लिए कुछ पाठ दिए गए हैं। इन पाठों की सामग्री को अधिक सोद्देश्य बनाने तथा उनमें आये हुए शिक्षण-बिंदुओं को उभारने की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के अंत में प्रश्न भी दे दिए गए हैं। इससे पाठ्य-सामग्री का बोध कराने तथा उनमें निहित जीवन-मूल्यों को समझाने में अनुदेशक को सहायता मिलेगी। साथ ही प्रतिभागियों में वैज्ञानिक ढंग से सोचने-विचारने तथा भावों और विचारों को मौखिक एवं लिखित रूप से व्यक्त करने की क्षमता का भी विकास होगा।

प्रस्तुत संस्करण के संबंध में शिक्षा-विशेषज्ञों, विशेषतः प्रौढ़ शिक्षा से सम्बद्ध कार्यकर्ताओं के सुझावों का हम सहर्ष स्वागत करेंगे और इस पुस्तक के आगामी संस्करण में उनका यथोचित उपयोग किया जाएगा।

दिनांक 29.1.88

गणेश शंकर चौधरी
निदेशक,
साक्षरता निकेतन, लखनऊ

दो शब्द

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों की सफलता में पठन-पाठन सामग्री का महत्वपूर्ण योगदान है। मिशनं ने मानक पठन-पाठन सामग्री की रूपरेखा भी दी है। इसमें जोर इस बात पर दिया गया है कि यह मानक सामग्री ऐसी हो,जो (अ) प्रौढ़ों की कार्यात्मक दक्षता बढ़ा सके,उनके कौशल का विकास कर सके तथा आर्थिक कार्य-कलाप से जुड़ी हुई हो,(ब) इसमें व्यक्तिगत, कौटुम्बिक, सामाजिक गतिविधियों, समस्याओं से संबंधित कुछ न कुछ चेतना जागृति के बिन्दु अवश्य हों,(स) विभिन्न वर्गो, भाषाओं, धर्मों और प्रांतों में विभाजित होते हुए देश की समस्याओं के प्रति प्रौढ़ को सजग करते हुए उसे राष्ट्रीय एकात्मता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के लिए अभिप्रेरित किया जा सके,(द) कोई भी,साक्षरता अथवा गणित का,क्षेत्र ऐसा न हो,जो प्रौढ़ों के जीवन, रुचियों और आवश्यकताओं को स्पर्श न करता हो।

मानक पठन-पाठन सामग्री में ऐसी शैक्षिक विधि पर बल दिया गया है,जिससे साक्षरता सम्बन्धी दक्षताएँ केवल ६ महीने के भीतर प्राप्त हो सकें। सामग्री में ही परीक्षण और मूल्यांकन की विधि भी जुड़ी हो, साथ ही जो कसौटियाँ सामग्री निर्माण के विषय में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित की गयी हैं,उन कसौटियों के आधार पर भी सामग्री जाँची-परखी जा सके।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की सफलता के लिए क्षेत्रीय बोलियों एवं उनके आधार पर निर्मित सामग्री को विशेषज्ञों ने अधिक उपयुक्त माना है। यह कहा गया है कि स्थानीय बोली के आधार पर भाषा सिखाने का कार्य सहज होगा, साथ ही प्रौढ़ को अधिक ग्राह्य एवं सुपाच्य भी होगा।

सामग्री निर्माण सम्बन्धी उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए साक्षरता निकेतन द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण मूल साक्षरता सामग्री का आद्योपांत संशोधन किया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि मेरे परामर्श के अनुसार यह कार्य पूरा हो गया। निःसंदेह यह सामग्री साक्षरता मिशन के उद्देश्यों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

दिनांक : दिसम्बर 30 , 1988

ईश्वर शरण गौड़
निदेशक,
प्रौढ़ शिक्षा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

इस संस्करण के संबंध में

'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' पुस्तिका में उल्लिखित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की विषय-वस्तु के परिप्रेक्ष्य में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के लिए तैयार की गई प्रवेशिकाओं में यथानुसार संशोधन, परिर्वधन एवं परिवर्द्धन करना अपरिहार्य हो गया है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पठन-पाठन सामग्री का पुनरीक्षण और संशोधन करने के लिए साक्षरता निकेतन में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इनमें निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा, श्री ईश्वर शरण गौड़ के अतिरिक्त अनेक शिक्षाविद् एवं भाषा विशेषज्ञों ने भाग लिया। इन विशेषज्ञों के सहयोग से इस संस्करण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली एवं प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित कार्यशालाओं की संस्तुतियों को समायोजित किया गया है।

इस संस्करण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि (अ) इस प्रवेशिका में दी गई सामग्री से ६ महीने के भीतर निरक्षर प्रौढ़ व्यावहारिक साक्षरता प्राप्त कर सकें, (ब) राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के विभिन्न आयामों, जैसे व्यावहारिक दक्षता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, मनोरंजन, चेतना जागृति, धार्मिक सौहार्द के कतिपय आधारिक पक्षों का परिचय नव-साक्षर को प्राप्त कराया जा सके, तथा (स) शिक्षण-प्रशिक्षण के वातावरण को सृजित करने के लिए उपयुक्त सामग्री अनुदेशक के हाथ में उपलब्ध हो सके।

यह सुसंयोग रहा है कि इस प्रवेशिका के पुनरीक्षण एवं संशोधन में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार के सलाहकार श्री जी.वी. भक्तप्रिय, डॉ. रामदास, राज्य संदर्भ केन्द्र, जामिया मिलिया, नई दिल्ली के निदेशक श्री मुश्ताक अहमद तथा उनकी सहयोगी श्रीमती निशात फारुक ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिये। अन्य विशेषज्ञों में डॉ. एन.के. सिंह, श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय', डॉ. श्यामलाकान्त वर्मा तथा डॉ. टी.आर. सिंह आदि ने अपना-अपना योगदान दिया। साक्षरता निकेतन के पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग के सहयोगियों ने बड़े मनोयोग से इस कार्य को सम्पन्न कराया।

मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए बड़ी प्रसन्नता है कि इस प्रवेशिका के संशोधन संबंधी कार्य में हमें हर स्तर पर वर्तमान निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा, उ.प्र., श्री ईश्वर शरण गौड़ का दिशा-निर्देश एवं मार्ग-दर्शन मिला। एतदर्थ हम उनके अत्यन्त अनुग्रहीत हैं।

आशा है, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति में हमारी यह प्रवेशिका कसौटी पर खरी उतरेगी।

दिनांक : दिसम्बर 30, 1988

गणेश शंकर चौधरी
निदेशक
साक्षरता निकेतन, लखनऊ

अनुदेशक बंधुओं से-

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में जो प्रतिभागी आते हैं, उन्हें कई प्रकार के अनुभव हैं। अपने व्यवसाय, समाज, रीति-रिवाज, देश,धर्म के विषय में वे बहुत कुछ जानते-समझते हैं और उन्हीं के अनुसार आचरण करते हैं। उनमें यदि कोई कमी है तो यही कि वे निरक्षर हैं, पढ़-लिख नहीं सकते। आपमें और उनमें जो फर्क है,वह भी यही है कि आप पढ़ने-लिखने में समर्थ हैं और अब उन्हें पढ़ाने जा रहे हैं।

निरक्षर प्रौढ़ों को सबसे पहले वर्ण-ज्ञान कराना है। इस प्रवेशिका में यह ज्ञान उस क्षेत्र की परिचित शब्दावली के आधार पर कराया गया है। इसमें शब्दावली का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये शब्द (क) उनके जीवन,परिवेश से सम्बन्धित हों, (ख) उनके जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों - कृषि, व्यवसाय, शिल्प, लोक-कला, संगीत, संस्कृति आदि से संबंधित हों, (ग) आधुनिक जीवन के विकास की नई दिशाओं से संबंधित हों, जैसे, कृषि के नए साधन (ट्रैक्टर, उर्वरक, ट्यूब वेल, थ्रेसर आदि), ऊर्जा (गोबर गैस, सौर चूल्हा, पवन चक्की आदि), परिवार कल्याण (जच्चा-बच्चा, पोषण, टीका आदि) और विकास योजनाएँ।

इन शब्दों के आधार पर वर्ण-ज्ञान कराने का मूल उद्देश्य यह है कि (1) प्रौढ़ आज की सामाजिक समस्याओं तथा विकास के नए-नए साधनों से परिचित हो सकें, (2) उनकी व्यावसायिक कार्य कुशलता में वृद्धि हो, तथा (3)वे अपनी गिरी हालत में सुधार ला सकें वस्तुतः साक्षरता कार्यक्रम में ये चारों बातें निहित हैं- साक्षरता, सामाजिक चेतना, व्यावसायिक दक्षता और राष्ट्रीय मूल्य।

प्रौढ़ शिक्षा कार्य में आपको केन्द्र पर 2 घण्टे का समय दिया जाता है। इस समय की एक समय सारिणी भी आपने बनाई होगी। प्रतिदिन केन्द्र पर जो कार्य-कलाप आयोजित किये जाने हैं,उसका समय विभाजन समय सारिणी में दिया होगा। इसके अनुसार आप केन्द्र के क्रिया-कलाप आयोजित करेंगे।

आपको प्रतिभागियों के लिए जो प्रवेशिका, स्लेट, पेंसिल और अभ्यास पुस्तिकाएँ दी गई हैं, उन्हें कृपया बाँट दें। आपके काम में सहायता करने के लिए प्रवेशिका, शिक्षण चार्ट, विषय परिचय पत्रियाँ, पोस्टर्स और मूल्यांकन के लिए सामग्री दी गई है।

आप यह ध्यान रखें कि पहले दिन के पढ़ाने की प्रक्रिया उसके बाद के दिनों की प्रक्रिया से भिन्न होगी। परन्तु फिर भी एक सामान्य स्थिति यह रहे कि सामूहिक प्रार्थना करने के बाद जो पाठ आप पढ़ाने जा रहे हैं,उसके पहले के पाठों पर आप दो-चार प्रश्न प्रतिभागियों से करें। उनका उत्तर प्राप्त होने पर,जो पाठ आप पढ़ाने जा रहे हैं, उस पर चर्चा प्रारम्भ करें। शिक्षण चार्ट के पीछे पाठ पर चर्चा करने के लिए कुछ प्रश्न और सामग्री दी हुई है। इसे पढ़-कर आएँ। उनसे प्रश्न पूछें और उस सामग्री को धीरे-धीरे कक्षा में भी पढ़ें। प्रश्न पूछने तथा चर्चा करने का तरीका नीचे दिया गया है :

चर्चा

शिक्षण चार्ट तथा प्रवेशिका में दिए चित्र पर चर्चा करते समय आप इस बात का विशेष ध्यान रखें कि चर्चा में प्रौढ़ प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी हो, अर्थात् वे अपनी बात खुलकर कह सकें। आपकी सफलता इस बात में है कि आप स्वयं कम बोलें और प्रौढ़ों को अधिक से अधिक बोलने का अवसर दें। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि प्रौढ़ जो बात कहते हैं, यदि उसमें कुछ जोड़ने की आवश्यकता है तो उसे अपनी ओर से जोड़ दें। प्रौढ़ यदि विषय से बाहर चर्चा करने लगें तो उन्हें सावधानी से मूल विषय पर ले आएँ। यह ध्यान रखें कि आपकी किसी बात से प्रौढ़ों के सम्मान पर आँच न आये और वे चर्चा से सही निर्णय पर पहुँच सकें। संक्षेप में-

(1) चित्र में जो कुछ दिखाई दे रहा है, उस पर प्रश्न करें।
(2) चित्र में जो चीजें दिखाई गई हैं, उनमें कुछ को प्रौढ़ पहचानते होंगे। जिन्हें वे पहचानते हैं, उनके बारे में पहले उनसे प्रश्न करें। जिन्हें वे नहीं पहचानते, उनके बारे में उनको जानकारी दें।
(3) चर्चा में हर एक प्रौढ़ प्रतिभागी को बोलने का अवसर दें। सभी को अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करें। आपकी सफलता की एक बड़ी कसौटी यह है कि प्रौढ़ों का मौन टूटे और वे सामूहिक चर्चा में खुलकर भाग लें।
(4) चर्चा करते समय विषय बोध और ग्राह्यता की दृष्टि से यदि आवश्यक हो तो उस बोली में प्रश्न करें,जिस बोली को प्रौढ़ प्रायः इस्तेमाल करते हैं। जैसे,पूर्वी क्षेत्र में 'चावल' शब्द का अर्थ कच्चे चावल से है तथा 'भात' पके हुए चावल को कहते हैं।
(5) चर्चा में प्रतिभागियों को पाठ के विषय की पूरी जानकारी दें। इससे वे विषय को अच्छी तरह से समझ सकेंगे।

चित्र के आधार पर चर्चा पूरी हो जाने पर उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाना आरम्भ करें।

साक्षरता शिक्षण

साक्षरता शिक्षण में तीन बातें शामिल हैं--पढ़ना, लिखना और आरम्भिक गणित का ज्ञान देना। प्रवेशिका द्वारा वर्ण, मात्रा, संयुक्ताक्षरों तथा अंकों का ज्ञान कराया गया है। इनके ज्ञान के बाद प्रौढ़ शब्द और वाक्य पढ़ना सीख जायेंगे, अभ्यासों द्वारा प्रौढ़ लिखने का कौशल प्राप्त करेंगे तथा इन्हीं से वे गणित का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे। साक्षरता शिक्षण देते समय अनुदेशक द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया का क्रम इस प्रकार होगा :

(1) चित्र।
(2) मूल शब्द।
(3) मूल शब्द में आए हुए वर्ण और मात्राएँ।
(4) इन वर्णों और मात्राओं से बने हुए अन्य शब्द।
(5) इन शब्दों के आधार पर पढ़ने के लिए बने वाक्य तथा पठन अभ्यास।

आप पुनः पाठ में दिए गए चित्र की ओर संकेत करें। प्रौढ़ को बताएँ कि जिस चीज का यह चित्र है, उसका नाम नीचे लिखा है। मूल शब्द के नीचे उँगली रखकर बताएँ। प्रौढ़ों से कहें कि वे प्रवेशिका में उस शब्द को देखें और उन पर अपनी उँगली फेरें।

(क) पढ़ना सिखाना

(1) उस शब्द को श्याम पट पर लिख दें।
(2) उस शब्द का शुद्ध उच्चारण करें और प्रौढ़ों से भी कराएँ।
(3) उच्चारण करते समय शब्द में आई हुई ध्वनियों का अलग-अलग उच्चारण करें और प्रौढ़ों से कराएँ।
(4) प्रत्येक ध्वनि से संबधित वर्ण की पहचान कराएँ और उनका लिखित रूप बताएँ।
(5) अगर मूल शब्द में कोई मात्रा आई है तो मात्रा को ही लिखें, उससे संबधित स्वर को नहीं। जैसे 'चना' शब्द में न वर्ण पर 'ा' की मात्रा है इसलिए यह मात्रा 'ा' लिखें और पढ़ाएँ। 'आ' की चर्चा अभी न करें।
(6) नया पाठ पढ़ाते समय उसमें आए नए वर्णों और मात्राओं को ही श्याम पट पर लिखें, पहले सिखाए हुए वर्णों और मात्राओं को नहीं।

(7) सीखे हुए वर्णों और मात्राओं से बनने वाले अन्य शब्दों को श्याम पट पर लिखें और उन्हें पढ़ना सिखाएँ।

(8) हर प्रौढ़ से अपनी किताब में प्रत्येक वर्ण या मात्रा के सामने लिखे शब्दों में से उस वर्ण के नीचे उँगली रख कर पहचान करवाएँ।

(9) जब प्रौढ़ इन वर्णों और मात्राओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएँ तब उनसे पाठ में दिए गए शब्दों तथा वाक्यों को भी पढ़वाएँ। ध्यान रखें कि वे शुद्ध उच्चारण के साथ ही पढ़ें।

(10) पाठ के अंत में दी गई पठन सामग्री को अनुदेशक पहले स्वयं पढ़ कर सुनाएँ। उसके बाद प्रौढ़ों से उसे पढ़वाएँ। सम्भव है,प्रौढ़ पूरी सामग्री एक बार में न पढ़ सकें, इसलिए उनसे पहले थोड़ी-थोड़ी सामग्री पढ़वाएँ। फिर पूरा अभ्यास पढ़वाएँ। पढ़ने का मौका हर एक को दें। प्रवेशिका समाप्त करने पर प्रौढ़ को पढ़ने संबंधी निम्नलिखित दक्षताएँ आनी चाहिए-

(1) शिक्षार्थियों की रुचि के विषय पर लिखे किसी आसान पैरे को सही तरीके से ३० शब्द प्रति मिनट की गति से बोलकर पढ़ना।

(2) सरल भाषा में लिखे छोटे पैरे को ३५ शब्द प्रति मिनट की गति से चुपचाप पढ़ना।

(3) रास्ते के संकेतों, इश्तिहारों, सरल हिदायतों तथा नव-साक्षरों के लिए छपे समाचार पत्रों आदि को समझकर पढ़ना।

(4) अपने काम-काज और रहन-सहन के संबंध में सरल रूप से लिखे संदेशों को समझने की योग्यता।

(ख) लिखना सिखाना

(1) लिखना सिखाने के लिए प्रवेशिका के प्रत्येक पाठ के साथ अभ्यास दिए गए हैं। उन अभ्यासों को कैसे पूरा किया जाय, इसके लिए अभ्यासों के साथ ही आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। उनको पढ़ लें।

(2) प्रवेशिका का पहला पाठ पढ़ाने के बाद लिखना सिखाने का अभ्यास भी साथ ही साथ कराना है। यही विधि सब पाठों के साथ अपनानी है।

(3) लिखना सिखाने के लिए सबसे पहले प्रवेशिका में दिए गए अक्षरों पर क्रम से उँगली फेरने का अभ्यास कराएँ फिर स्लेट पर लिखना सिखाएँ। जब स्लेट पर लिखने का अभ्यास हो जाए तो उसके बाद पेंन्सिल से पुस्तक में दिए गए अभ्यासों को पूरा कराएँ।

(4) वर्ण की बनावट के क्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ण के अलग-अलग घुमाव (स्ट्रोक) हर एक पाठ में दिए गए हैं। इससे लिखना सिखाना आसान रहेगा। आप उन घुमावों को श्याम पट पर लिखकर प्रौढ़ों से स्लेट पर लिखने का अभ्यास कराएँ। उसके बाद प्रवेशिका के पाठों में दिए गए अभ्यास कराएँ।

(ग) इमला सिखाना

(1) जब प्रौढ़ थोड़ा-थोड़ा लिखना सीख जाएँ तो उन्हें सीखे हुए वर्णों तथा मात्राओं को ध्यान में रखकर इमला बोलें। देख-देखकर लिखने तथा बोलकर इमला लिखने का अभ्यास प्रति दिन कराएँ।

(2) जितना कुछ प्रवेशिका या अभ्यासों में दिया गया है, लिखाई-पढ़ाई में उतना ही पर्याप्त नहीं है। अलग से भी शब्द और वाक्य लिखाएँ। उनके व्यवहार में आने वाली चीजें लिखवाएँ।

(3) साफ-सुथरी लिखावट पर विशेष ध्यान दें। लिखने की गति पर बराबर ध्यान रखें। लिखने संबंधी ये योग्यताएँ होनी चाहिए :

(अ) सात शब्द प्रति मिनट की गति से समझकर नकल करना।

(ब) पाँच शब्द प्रति मिनट की गति से सुने हुए को लिखना।

(स) ठीक-ठीक दूरी पर तथा सीधी पंक्ति में लिखना।

(द) रोजमर्रा के प्रयोग में आने वाले फार्म, छोटे पत्र तथा आवेदन पत्र अपने आप लिखना।

(घ) गणित सिखाना

आपने यह देखा होगा कि प्रौढ़ को थोड़ा बहुत गिनना आता है, पर वह अपनी गिनती को लिख नहीं सकता तथा अंक संबंधी अपनी समस्याओं को लिखकर हल नहीं कर सकता । इस प्रवेशिका में पहले पाठ से गिनतियाँ लिखी गयी हैं। यह उद्देश्य है कि आप उस पाठ पर चर्चा करने, पढ़ना-लिखना सिखाने के बाद गिनती को पहचानना तथा लिखना भी सिखाएँ ।

(1) पहले पाठ से गिनती प्रारम्भ करके आगे धीरे-धीरे गिनतियों की संख्या बढ़ा दी गई है। गिनती सिखाने में भी वही क्रम अपनाएँ,जो पढ़ना-लिखना सिखाने में आपने रखा है, अर्थात् पहले पढ़ना या पहचानना सिखाएँ, फिर लिखना।

(2) चित्रों में वस्तुओं को गिन कर उनके सामने गिनती लिखना सिखाएँ। गणित सिखाने के अभ्यास प्रवेशिका में दिए गए हैं। उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार गणित सिखाएँ।

(3) प्रवेशिका समाप्त होने पर प्रतिभागी में गणित संबंधी निम्नलिखित दक्षताए आनी चाहिए :

(अ) 1 से 100 अंकों को पढ़ना तथा लिखना।

(ब) छोटे - मोटे हिसाब करना, जिसमें जोड़ और घटाना तीन अंकों से ज्यादा का न हो और गुणा व भाग दो अंकों से ज्यादा का न हो।

(स) भार, नाप-तौल, रुपये-पैसे, दूरी तथा क्षेत्रफल की मीट्रिक इकाइयों तथा समय की इकाइयों का काम चलाने लायक ज्ञान होना।

(द) अनुपात तथा ब्याज की साधारण जानकारी तथा उनका अपने काम-काज और रहन-सहन में प्रयोग। इनमें भिन्न वाली संख्याएँ न हों।

प्रवेशिका के पाठ पढ़ाने का एक उदाहरण :

बुंदेल भारती' के पहले पाठ को पढ़ाने का एक नमूना दिया जा रहा है—

1- चर्चा :

इस प्रवेशिका का पहला पाठ'चना'है। उसका चित्र दिखाइए और इस ढंग से प्रश्न पूछिए — इस चित्र में आप क्या देख रहे हैं?

शिक्षार्थी — चना

यदि शिक्षार्थी न बता पाएँ तो अनुदेशक स्वयं बता दें — 'यह चना का चित्र है।' अब चने के बारे में चर्चा करें। इस चर्चा में मुख्य रूप से निम्नलिखित बातों को उभारें —

(1) चने की मुख्य जातियाँ

(2) आवश्यक खाद और उर्वरक
(3) चने की फसल में लगने वाले रोग
(4) फसला सुरक्षा के उपाय
(5) विकास खण्ड से मिलने वाली सुविधाएँ

उपर्युक्त बिंदुओं पर प्रश्न करें। चर्चा के दौरान अन्य संबंधित प्रश्नों को जोड़ते चलें। चर्चा द्वारा चने की आधुनिक खेती की जानकारी दें।

2 (अ) पढ़ाई :

शिक्षण चार्ट में बने चित्र की ओर पुनः संकेत करें। प्रवेशिका में बने चित्र को भी देखने को कहें। फिर पूछें- यह किस चीज का चित्र है ?

शिक्षार्थी— चना या जो भी उत्तर दें।
अनुदेशक— जिस चीज का चित्र है, उसका नाम नीचे लिख दिया गया है–चना
चना शब्द के नीचे उँगली रखकर कहें–जब हम चना कहते हैं तो इसमें दो आवाजें निकलती हैं-
च ना
ना में ा को अलग कर पढ़ाएँ।
न ा
इस प्रकार च न ा अलग-अलग पढ़ाएँ।
ा को च न के साथ जोड़कर सिखाएँ।
न ना
श्याम पट पर इन वर्णों से बनने वाले शब्दों को लिखें—
च चाचा
न नाना

चार्ट से पढ़ा लेने के बाद प्रवेशिका में लिखे शब्दों तथा वाक्यों को पढ़ाएँ।

(ब) लिखाई :

श्याम पट पर एक-एक दर्ण को लिखकर दिखाएँ। वर्णों को घुमाव के अनुसार लिखें, जैसा कि पाठ में दिया गया है।
शिक्षार्थियों से स्लेट पर लिखने को कहें। स्लेट पर अभ्यास कर लेने के बाद अभ्यास पुस्तिका में दिए गए निर्देशों के अनुसार लिखवाएँ।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में इंगित कार्यक्रम की सफलता के कारक

* शिक्षक निष्ठावान हो,अपना काम करने में अच्छी तरह से प्रशिक्षित हो और गरीबों तथा निरक्षरों के साथ समानता का व्यवहार कर सके।
* सीखने का वातावरण सुधरा हुआ हो, कक्षाओं में अच्छी प्रकाश व्यवस्था और उपयुक्त अध्ययन सामग्री हो। शिक्षार्थियों के मन में यह भावना हो कि जो लोग कार्यक्रम चलाते हैं,उन्हें हमारी चिंता है।
* सीखने की गति तेज हो, शिक्षार्थियों में यह विश्वास पैदा किया जा सके कि उनमें सीखने की सामर्थ्य है और साक्षरता शुरू में ही नीरस लगती है,बाद में नहीं।
* सतत् शिक्षा के अच्छे प्रबंध हों,अध्ययन सामग्री सुलभ हो,साक्षर व्यक्ति को अपनी नई स्थिति के प्रति जागरूक बनाया जाए।
* ऐसा वातावरण तैयार हो,जिसमें साक्षरता की जरूरत महसूस की जाए,जिसे तैयार करने में राजनैतिक तथा प्रशासनिक नेता योगदान दें और जिसमें राष्ट्रीय संकल्प दिखाई दे।
* और भी कई बातें हैं, जैसे,सीखने की सामग्री आकर्षक हो, कार्यकर्ताओं और शिक्षार्थियों के लिए सैर-सपाटे और मेलों में जाने के अवसर, प्रोत्साहन और पुरस्कार हों। उन्होंने जो सफलता पाई है, उसकी सब जगह प्रशंसा हो।

बुंदेल भारती प्रवेशिका

(पाठ इकाई विवरणिका)

पाठ संख्या	मूल शब्द	वर्ण मात्राएँ	गणित	राष्ट्रीय सा. मिशन में इंगित्त प्रेरणादायी कार्यक्रम	विषय एवं चर्चा बिन्दु
1.	चना	च न ा	1 की गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास,आर्थिक कार्य-कलाप	कृषिः चने की खेती, उन्नत बीज, रोग, उपचार, सुविधाएँ
2.	बाजरा	ब ज र	2 से 3 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्य-कलाप	कृषिः बाजरे की खेती, उन्नत बीज, बीमारियाँ, सुविधाएँ
3.	गाय बकरी	ग य की	4 से 5 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्य-कलाप	पशुपालन : लाभ, उन्नत जातियाँ, नस्ल सुधार, सुविधाएँ आदि
4.	पान महोबा	प म ह ो	6 से 10 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्य-कलाप चेतना जागृति कार्यक्रम	व्यवसायः पान की खेती, जातियाँ, उपज, सांस्कृतिकः महोबे का महत्व
5.	घर खपरैल	घ प ै ल	1 से 10 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, चेतना जागृति	आवास : सस्ता, स्वच्छ घर कैसा हो?
6.	अभ्यास पाठ	कविता	11 से 20 तक गिनती	चेतना जागृति, साँस्कृतिक पक्ष	श्रम का महत्व
7.	माताटीला बांध	त ट ँ ध	21 से 30 तक गिनती	चेतना जागृति, राष्ट्रीय विकास	विकास योजनाएँ: बुंदेलखण्ड में सिंचाई एवं विद्युत परियोजनाएं
8.	बंजर, सिंचाई	* ि स ई	31 से 50 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्य-कलाप	भूमि सुधारः भूमि सुधार के कार्यक्रम
9.	महुआ बेर आँवला	ु आ े व	51 से 70 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, चेतना जागृति	वानिकीः सामाजिक वानिकी
10.	तेंदू सागौन ढाक	द ू ौ ढ	71 से 100 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्य-कलाप	वन उद्योगः वनों से लाभ-उद्योग
11.	झाँझ नगाड़ा फाग	झ ड़ ड फ	1 से 100 तक गिनती का अभ्यास	मन बहलाव कर आराम देने वाला कार्यक्रम, साँस्कृतिक कार्य-कलाप	साँस्कृतिक पृष्ठ भूमि, सामाजिक त्योहार
12.	अभ्यास का पाठ	कविता	गिनतियों का अभ्यास	राष्ट्रीय मूल्य,चेतना जागृति	वृक्षारोपण
13.	अनाज अंडा मछली बथुआ	अ अं छ थ	इकाई दहाई सैकड़ा का ज्ञान	स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर आधारित	आहारः पौष्टिक आहार

14.	औरत भोजन पोषण	औ भ ष ण	इकाई दहाई सैकड़ा का अभ्यास	स्वास्थ्य से संबन्धित विषयों पर आधारित, विशेषकर बाल-स्वास्थ्य से जुड़े महिला कार्यक्रम	परिवार कल्याण: गर्भवती व धात्री माँ का भोजन
15.	नेत्र इजाज ऐनक	त्र इ ए	दो अंकों का जोड़	स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर आधारित	स्वास्थ्य: आँखों की सुरक्षा
16.	ऊन उधार ऋण मशीन	ऊ उ ऋ श	एक अंक का घटाना	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्य-कलाप संबंधी कार्यक्रम	स्व-रोजगार योजना: विकास योजनाएं
17. 18.	गढ़ ओरछा कृपाण अभ्यास का पाठ	ढ़ ओ ृ कविता	एक अंक का गुणा एक अंक का भाग	चेतना जगाने वाला कार्यक्रम सांस्कृतिक पक्ष	ऐतिहासिक: वीर भूमि बुंदेलखण्ड वीर-भूमि बुंदेलखण्ड
19.	शिक्षा पाठ ज्ञान एकता	क्ष ठ ज्ञ ए	रुपये-पैसे का दो अंकों का जोड़	चेतना जगाने वाला कार्यक्रम	शिक्षा: पढ़ाई का महत्व, एकता
20.	संयुक्ताक्षर (पाई वाले)	—	दो अंकों का घटाना	राष्ट्रीय मूल्यों का ज्ञान	जनसंख्या शिक्षा: छोटा परिवार
21.	संयुक्ताक्षर (पाई वाले)	—	तौल का ज्ञान	चेतना जगाने वाला कार्यक्रम	सामाजिक: दहेज से छुटकारा
22.	संयुक्ताक्षर (घुंडी वाले)	—	लम्बाई का ज्ञान	—	—
23.	संयुक्ताक्षर (हलन्त वाले)	—	द्रव पदार्थों की नाप का ज्ञान	चेतना जगाने वाला कार्यक्रम	परिवार कल्याण: पत्र का नमूना
24.	संयुक्ताक्षर (र के रूप)	—	साधारण जोड़, घटाना और गुणा	स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर आधारित, विशेषकर बाल-स्वास्थ्य से जुड़े हुए महिला कार्यक्रम	सामान्य ज्ञान: गर्भवती महिलाओं को टीके लगवाना, हरी सब्जियों का महत्व
25.	अभ्यास पाठ	—	प्रतिशत का ज्ञान	चेतना जागृति	ऊर्जा: ऊर्जा के स्रोत
26.	अभ्यास पाठ	—	समय और घड़ी देखना	धार्मिक प्रवचनों, भजनों आदि से जुड़े कार्यक्रम	महापुरुष: गोस्वामी तुलसीदास
27.	अभ्यास पाठ	—	अनुपात का ज्ञान	स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर आधारित, विशेषकर बाल.स्वा.से जुड़े हुए महिला कार्यक्रम	परिवार कल्याण: बच्चों को टीके लगवाना राष्ट्रीय संदर्भ: राष्ट्रीय प्रतीक
28.	अभ्यास पाठ	—		राष्ट्रीय मूल्य	
29.	अभ्यास पाठ-		—	चेतना जागृति	देश की भौगोलिक जानकारी

पाठ 1

चना

च न ा

च ा न ा

च	चना
न	नाच
ा	चाचा नाना नाचना
	चना
	चाचा चाचा चना
	नाना नाना चना

लकीरें खींचिए :

अभ्यास 1

1. पढ़िए :

च	न	चा	ना
चाचा	नाना	नाच	नाचा
चना	नचना	नाचना	नचाना

2.1. लिखिए :

2.2. लिखिए :

चाचा ______ ______ ______

चना ______ ______ ______

नाना ______ ______ ______

3. गिनिए और लिखिए:

1 1 ....

पाठ 2

बाजरा

ब ज र

ब | बान बाबा

ज | जन जब जान बाज

बाजा जनाब बजाना

र | रबर रचना राजा नर

चारा बाजार

न बाजरा, न चना।

बाबा, बाजार जा।

अभ्यास 2

1.1. पढ़िए :

ब ज र च न

बा जा रा चा ना

1.2. चारा चरना चराना चरन

बाजार बाजरा बाजा राजा

2 लिखिए :

बाजरा

चारा

चरन

बाबा, बाजार जा ।

3. गिनिए और लिखिए :

2 2 ....

3 3 ....
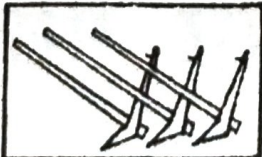
पाठ 3

गाय बकरी

ग य क ी

ग	गगन	नगर	गाजर	बाग	गागर
य	यान	नयन	चाय	नया	बयार
क	कब	कनक	काका	नाक	बकरा
ी	बीज	चीनी	नानी	कबीर	गरीब

जगरानी जागी

जानकी जागी।

जगरानी की बरबरी बकरी

जानकी की कबरी गाय।

गाय का चारा

बकरी का चारा।

जगरानी बकरी चरा।

जानकी गाय चरा।

अभ्यास ३

1.1. चौखटे में लिखे वर्ण को पहचानिए और शब्दों में आए उस वर्ण के नीचे लकीर खींचिए :

ग	गज	जग	नगर	गगरा
य	जय	चाय	गाय	राय
क	कन	नाक	चाक	रकबा

1.2. पढ़िए :

क	का	की	काका	कीच
ग	गा	गी	गारा	गरीबी
च	चा	ची	चाक	चाची
ज	जा	जी	जाग	जीजी
ब	बा	बी	बाग	बगीचा
न	ना	नी	नाज	रानी
र	रा	री	राग	गगरी

1.3. लिखिए :

2. लिखिए :

चक ________________ चारा ________________

गाजर ________________ नयन ________________

कचनार ________________ कजरी ________________

2.1. पढ़िए और लिखिए :

जया की गाय। ________________

जगरानी की बकरी। ________________

जगन का चाक। ________________

कबीर का चक। ________________

काकी,कजरी गा। ________________

3. गिनिए और लिखिए :

पाठ 4
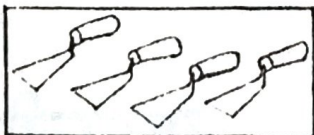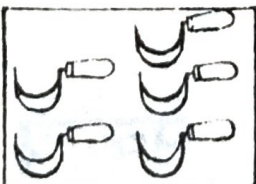
पान महोबा

प म ह ो

प	पग	पानी	पीपा	नाप	जीप
म	मन	मान	मीरा	नमक	जमीन
ह	हक	हार	नहर	हीरा	कहानी
ो	चोकर	गोबर	मोर	रोजगार	मकोय

पान

महोबा का पान।

जगह - जगह महोबा का पान।

मीरा, पान का रोजगार कर।

रानी, गहना कम पहन।

बहिन का कहना मान।

अभ्यास 4

1.1. नीचे लिखे शब्दों में प, म, ह को पहचानकर उनके नीचे लकीर खींचिए :

प	नाप	पराग	जपना	परी	कीप
म	यम	काम	मकान	नमक	महान
ह	राह	नहर	हजार	पहर	मजहब

1.2. पढ़िए :

काम	हीरा	मीनार	पीपा	जापान
गोकरन	नाहर	गाहक	कमजोर	मोहक
कोहनी	गायक	हकीम	रोजी	बोरी

2.1. लिखिए :

प प ....

म म ....

ह ह ह ....

2.2. ो जोड़कर पढ़िए और लिखिए :

ो	र जगार रोजगार	______	म हर	______
ो	क हरा	______	र ग	______
ो	च कर	______	ग री	______

2.3. पढ़िए और लिखिए :

गोपी, रोज चना चबा।

काम कर। रोजगार कर।

______

______

3. गिनिए, सीखिए और लिखिए :

6 6 ....

7 7 ....

8 8 ....

9 9 ....

10 10 ....

पाठ 5
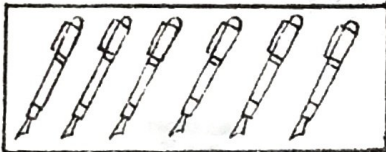
घर खपरैल

घ ख ै ल

घ	घन	घाम	घी	बाघ	घनघोर
ख	खबर	खारा	खीर	राखी	खोज
ै	चैन	नैहर	पैर	पैजनी	पैगाम
ल	लहर	लाल	पालक	होली	लोहा

नाहर का बाग है।
नाहर की जमीन है।
गाय है। बैल है। बकरी है।
लाजो, नाहर की घरनी है।
लाजो बोली–
हर चीज़ है,
पर न घर है, न बकरी है।
खपरैल लानी है।
घर बनाना है।
खपरैल का घर।

अभ्यास 5

1.1. चौखटे में लिखे शब्द को आगे लिखे शब्दों में खोजिए और उसके नीचे लकीर खींचिए :

घी	खीरा	गलीचा	घी	घनघोर
राखी	सखी	राख	खीर	राखी
मैना	बैल	मैका	मैना	मैया
होली	होली	माली	गोली	चोली
बाघ	माघ	बाघ	घाम	साग

1.2. पढ़िए :

लीला को नैहर जाना है।
मोहन को बाजार जाना है।
मीरा हैरान न हो।
घर चल। खाना बना।

2.1. लिखिए :

2.2. चित्र देखकर नाम लिखिए :

----------- -----------

----------- -----------

2.3. 'ै' लगाकर पढ़िए और लिखिए :

पुजनी पैजनी ______ ______ ______

बगन ______ ______ ______ ______

पजामा ______ ______ ______ ______

खर ______ ______ ______ ______

गणित :

3. चौखटे में बने चित्रों को गिनिए और सामने खाली जगह में संख्या लिखिए:

----- -----

----- -----
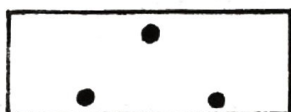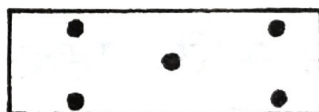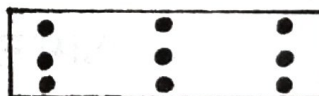
3.1. खाली जगहें भरकर गिनती पूरी कीजिए :

1___ 3 ___5___7___ 9 ___

3.2. 1 से 9 तक गिनतियाँ क्रम से लिखिए :

___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___

3.3. 9 से 1 तक उल्टे क्रम में गिनतियाँ लिखिए :

___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___
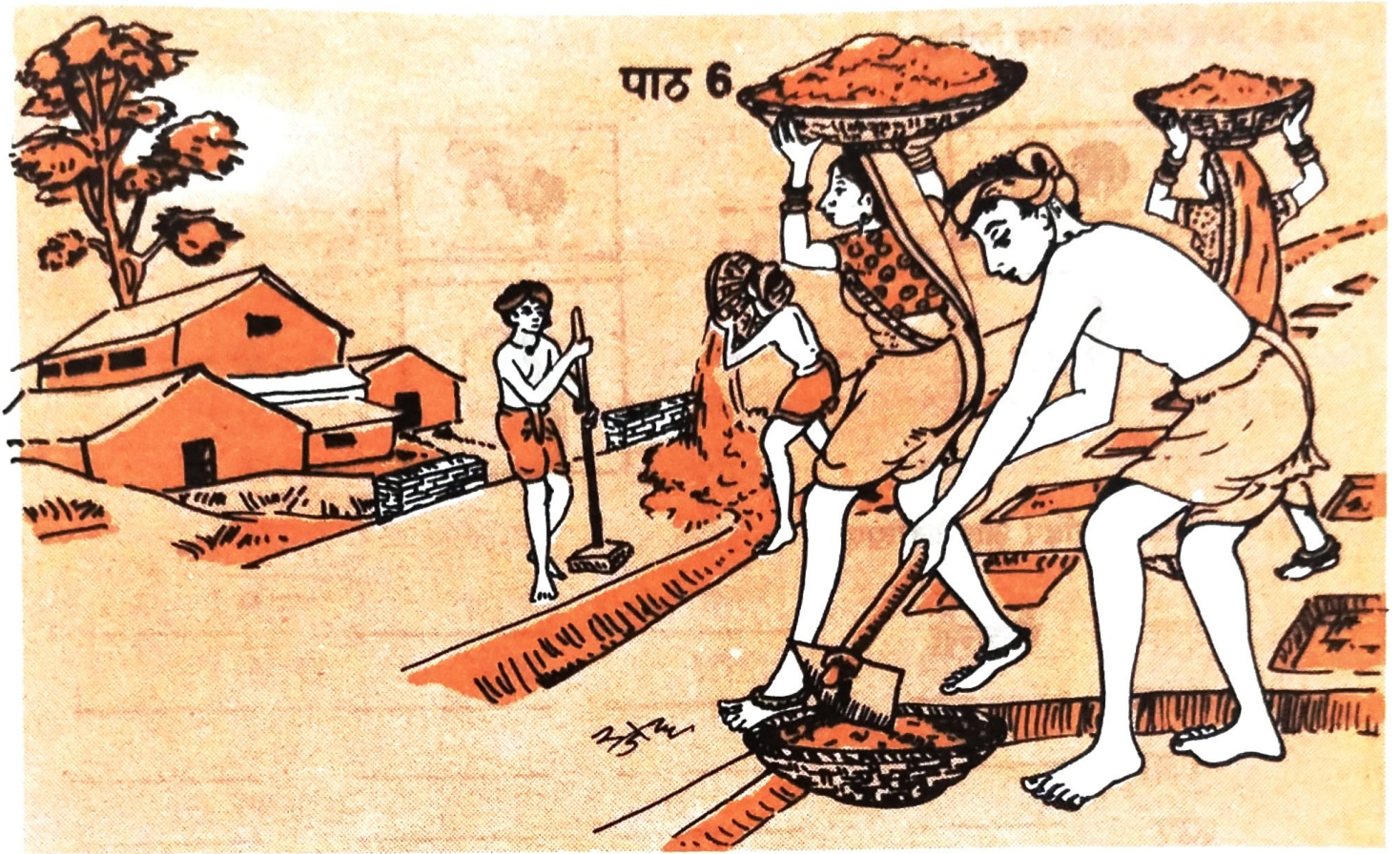
काम

काम करो,
काम करो।

काम हमारी है पहचान,
राम, रहीम न हो हैरान।

काम न हो जब, मन ना मार,
मन हो खोजी, काम हजार।

हर मजहब का कहना है,
काम हमारा गहना है।

नाम करो,
नाम करो।
काम करो, काम करो।

-डॉ॰ अश्वघोष

अभ्यास 6

1.1. मात्राएँ जोड़कर लिखिए और पढ़िए :

	ा	ी	ै	ो
क	का	की	कै	को
ख				
ग				
घ				
च				
ज				
न				
प				
ब				
म				
य				
र				
ल				
ह				

गणित :

2. 11 से 20 तक की गिनती सीखिए :

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20

2.1. समझिए :

10 + 1 = 11

2.2. दहाई इकाई सीखिए :

दहाई		इकाई		
1		1		
↓		↓		
10	+	1	=	11 ....
1		2		
↓		↓		
10	+	2	=	12 ....
1		3		
↓		↓		
10	+	3	=	13 ....
1		4		
↓		↓		
10	+	4	=	14 ....
1		5		
↓		↓		
10	+	5	=	15 ....

दहाई		इकाई		
1		6		
↓		↓		
10	+	6	=	16 ....
1		7		
↓		↓		
10	+	7	=	17 ....
1		8		
↓		↓		
10	+	8	=	18 ....
1		9		
↓		↓		
10	+	9	=	19 ....
2		0		
↓		↓		
20	+	0	=	20 ....

पाठ 7

माताटीला बाँध

त ट ँ ध

त	तन ताकत तीज तोता तैरना
ट	टमाटर टाट टीका टोकरी मटर
ँ	माँ पाँच खाँचा काँटा महँगा
ध	धन धान धीर धोखा करधनी

पानी बहता है।
रोज बहता है।
लगातार बहता है।
माताटीला पर पानी की धारा रोकी।
बाँध बनाया गया।
नाम है माताटीला बाँध।
बाँध का मनमोहक नजारा।
जहाँ तक नजर जाती है - पानी ही पानी।
गहरा पानी,नीला पानी।
हार को पानी।
नगर को पानी।
घर को पानी।
पानी की कमी न रही।

अभ्यास 7

1.1. चौखटे में लिखे वर्ण को उसके सामने के शब्दों में खोजिए और बताइए, यह कितनी बार आया है :

त	तकली	खत	तना	तरकारी		☐
ट	टमाटर	रहट	कटहल	मटर	मोटर	☐
ध	धरा	बाधक	माता	बोधगया		☐

1.2. पढ़िए :

जाँग	टाँका	पाँच	काँच
माँग	काँटा	बाँह	ताँत

2.1. लिखिए :

त ------ ---------- -------- --------

ट ------ ---------- -------- --------

ध ------ ---------- -------- --------

2.2. लिखिए :

धरती धन है। ____________________

पानी धन है। ____________________

बाँध का पानी लो। ____________________

टमाटर पपीता लगा लो। ____________________

गाजर पालक मटर बो लो। ____________________

3. 21 से 30 तक की गिनती सीखिए :

20 + 1	21	20 + 6	26
20 + 2	22	20 + 7	27
20 + 3	23	20 + 8	28
20 + 4	24	20 + 9	29
20 + 5	25	20 + 10	30

3.1. सही गिनती भरिए :

21 22 ___ 24 25 ___ 27 28 ___ 30

3.2. 30 से 21 तक उल्टी गिनती लिखिए :

___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___

पाठ 8

बंजर सिंचाई

ं ि स ई

ं	गंगा	घंटा	कंघी	जंगल	पतंग
ि	किताब	पति	महिला	किला	टिकट
स	सच	साग	सीख	सोहर	संत
ई	ईख	ईमान	ईंधन	निराई	कमाई

मंगल की जमीन

मंगल की जमीन बंजर है। जमीन पर बस कहीं-कहीं घास है।

किसन मंगल का मामा है। किसन मंगल को बताता है-मंगल, घबरा मत! सब लोग मिलकर नाला बाँधो। पानी रोको। सिंचाई करो। पानी होगा तो बंजर जमीन हरी होगी। चना होगा, बाजरा होगा। ईख होगी, राई होगी। साग-पात होगा। हरा चारा होगा।

मंगल किसन की बात मान गया। मिलकर नाला बाँधा। जमीन बराबर की। सिंचाई की। मंगल की जमीन बंजर नहीं रही।

अभ्यास 8

1. पढ़िए :

गंगा	किताब	लिखना	सीता
जंगल	बिजली	ईंधन	साग
सहजन	राई	टिकट	धंधा
सोहर	निराई	बंधन	सिंहासन

2.1 लिखिए : ˙ लगाकर पूरा कीजिए और लिखिए :

˙	कघी	कंघी	सत --------
˙	पख ----------		जगल --------
˙	बगाल ----------		पतग --------

'ि' लगाकर पूरा कीजिए और लिखिए :

'ि'	म हला	महिला	रबन --------
	हरन ----------		न नहाल ------
	जला --------		हं सया ------

2.2 चौखटे के वर्णों की सहायता से पाँच शब्द बनाकर लिखिए :

टि	बि	लि	या
र	बि	ज	ली
जि	र	पै	सा
जं	ग	ल	का
स	ह	ज	न

____

____

____

____

____

गणित :

3. 31 से 50 तक की गिनती सीखिए :

31 32 33 34 35 36 37 38 39 40

41 42 43 44 45 46 47 48 49 50

3.1 1 से 50 तक गिनती क्रम से लिखिए :

जैसे :- 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

11 __ __ __ __ __ __ __ __ __

21 __ __ __ __ __ __ __ __ __

31 __ __ __ __ __ __ __ __ __

41 __ __ __ __ __ __ __ __ __

3.2 नीचे के चौखटे पे छूटी हुई गिनतियाँ लिखिए :

1	2		4		6	7		9	10
	12	13		15		17	18	19	
21		23	24		26		28		30
31	32		34	35		37		39	40
	42	43		45	46		48		50

पाठ 9

ु	सुन हुनर बुलबुल सुपारी सुहाग धुनकी
आ	आम आग आसपास आँधी हलुआ
े	खेत जलेबी चबेना बेंत बहेलिया
व	वन विवाह वीरता हवा बेतवा

रघुबीर का चिंता

रघुबीर सबेरे ही खेत पर गया। वह हल ले गया, बैल ले गया। खुरपी ले गया, पर वह कोई काम न कर सका।

मेवादेवी रघुबीर का चबेना लेकर आयी। बोली–"आज काम नहीं कर रहे, कोई खास बात हो गई ?"

रघुबीर ने कहा–"हाँ मेवा, नाटा बैल बहुत कमजोर हो गया है। आज बेतवा पार करते राह में गिर गया। वही सोच है– नया बैल कैसे लें, पैसा तो है ही नहीं।"

"पैसा तो है, बहुत है, पहले चबेना लो।"
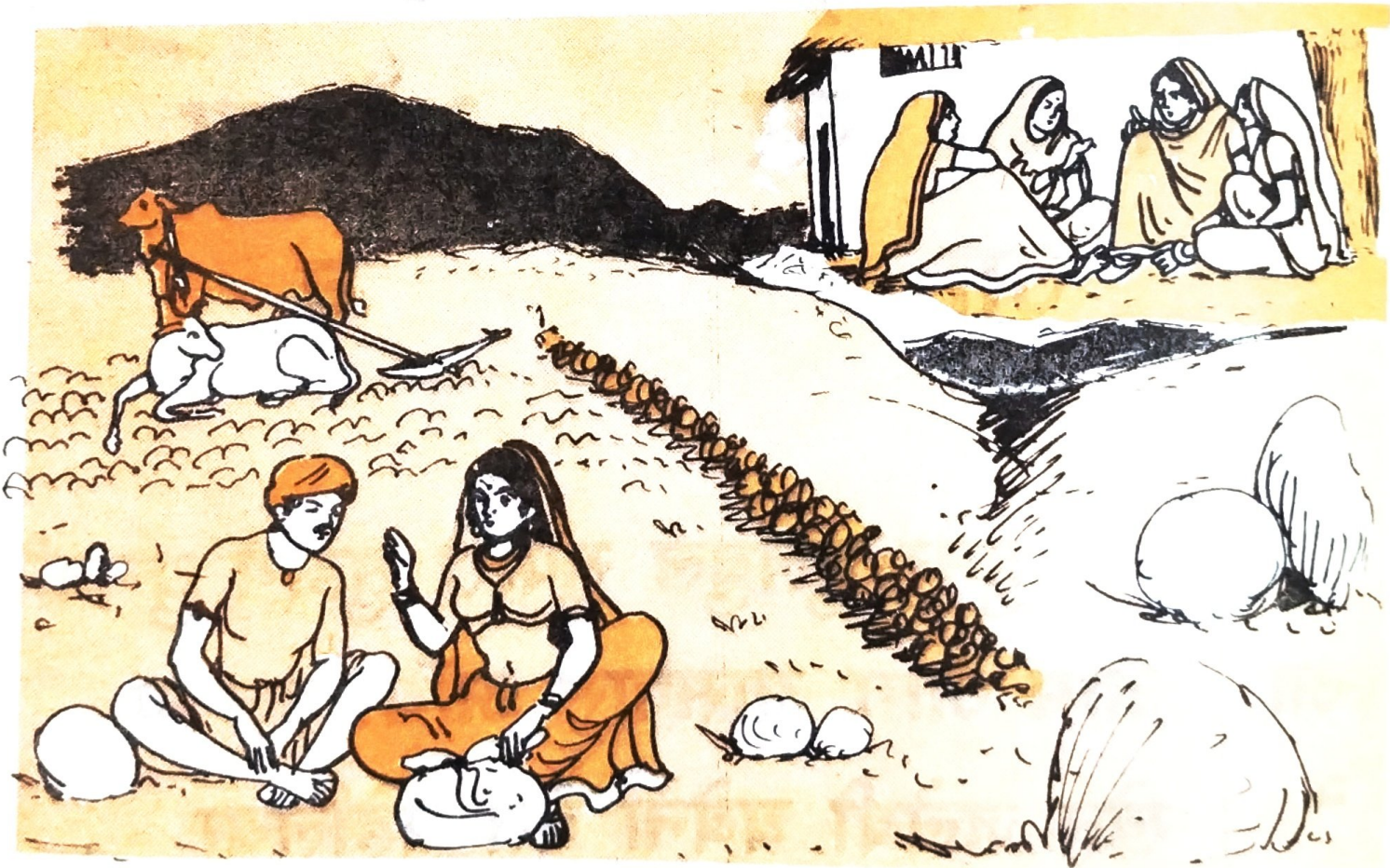
रघुबीर ने चबेना ले लिया। मेवादेवी ने बताया–‘‘मैंने बहुत रुपया जमा किया है। जानते हो कैसे! बेर, महुआ व आँवला बेचकर। तुमको बताया नहीं। चुपचाप सब किया है। आसपास बहुत बेर हैं। महुआ व आँवला हैं। ये सब हमारे मेवे हैं, मेवे। यही सोचकर गाँव की महिलाओं ने महिला समिति बनाई है। समिति ने ही तय किया है कि हम सब ये काम करेंगी।

‘‘वाह मेवा, वाह! तुमने तो मेरी सारी चिंता ही हर ली। सच मानो मेवा-

तुम जैसी हो घर की घरनी।
तब काहे की चिंता करनी।।’’

अभ्यास 9

1.1 समान शब्दों को रेखाओं से मिलाइए :

बुनकर	आग
आँधी	जेवर
पटेला	हवन
जेवर	बुनकर
हवन	आँधी
आग	पटेला

1.2 'आ' अथवा 'व' जोड़कर पढ़िए और लिखिए :

म	चा ल	बेत ।	महु	सा न
______	______	______	______	______
______	______	______	______	______

2.1 कजरी, बेतवा, सेहत, गाजर अथवा केला शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे कीजिए और लिखिए :

1. मेवालाल ने खेत में ______________ लगाया।
2. माताटीला बाँध ______________ नदी पर बना है।
3. हरा साग खाने से ______________ बनती है।

4. ____________ खाने से आँखे खराब नहीं होतीं।

5. ______________ सावन में गाई जाती है।

____

____

____

____

____

गणित :

3. 51 से 70 तक की गिनती सीखिए :

51 52 53 54 55 56 57 58 59 60
61 62 63 64 65 66 67 68 69 70

3.1 लिखिए :

51 ______ ______ ______ ______ ______

61 ______ ______ ______ ______ ______

3.2 खाली जगहों में गिनती भरिए।

51	52		54	55
	57	58		60
61	62	63	64	
66	67		69	70

तेंदू सागौन ढाक

द ू ौ ढ
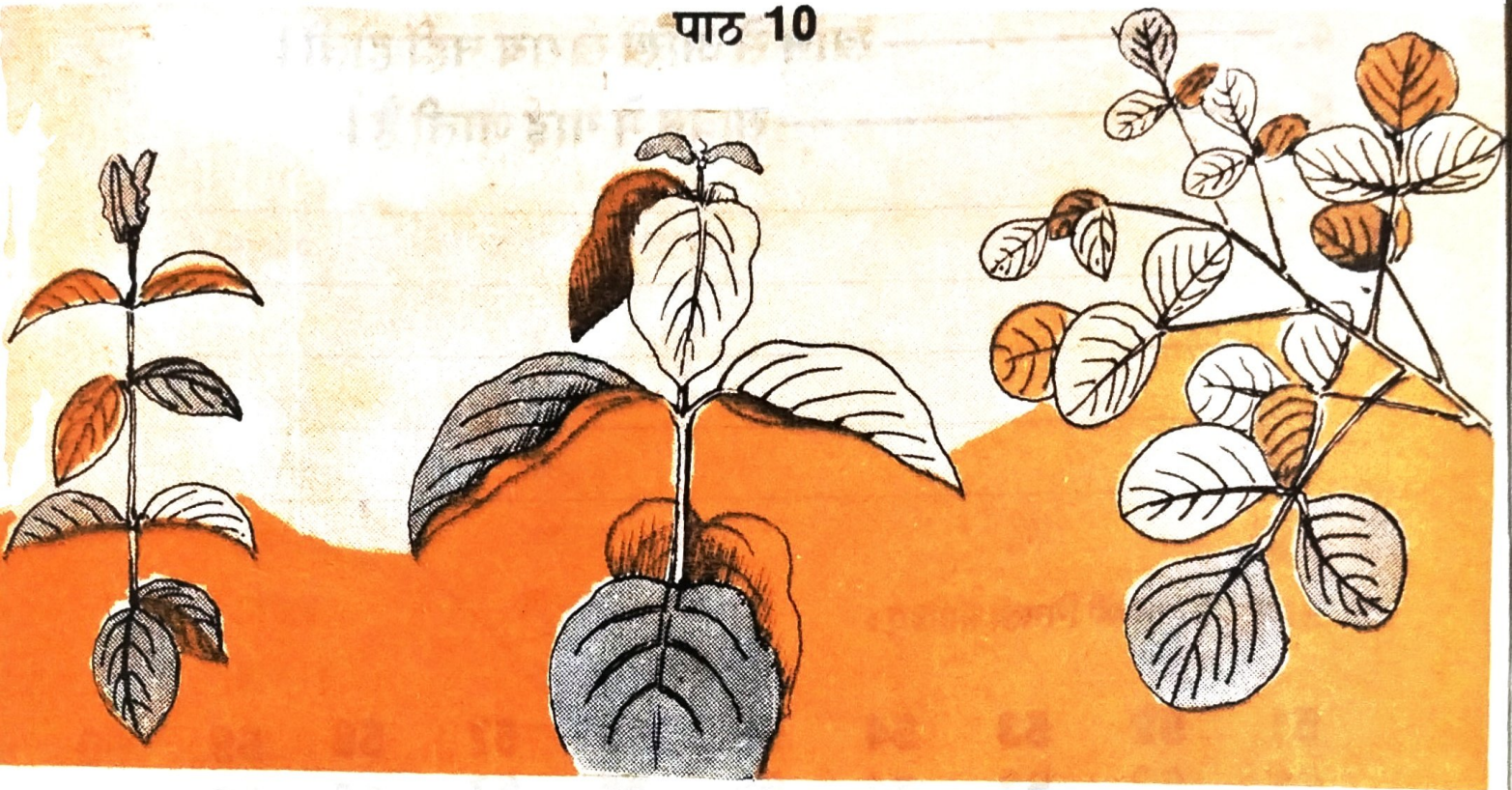
द	दवा दाना दीवाली दोपहर मंदोदरी
ू	दूध रूप कबूतर खजूर लंगूर
ौ	बौर पौधा चौपाल लौकी खिलौना
ढ	ढपली ढाल ढील ढेला ढोलक

वनदेवी, वनदेवता

मेवादेवी की मदद से रघुबीर बैल ले आया। दोनों दोपहर तक खेती का काम करते। मेवादेवी तीसरे पहर ढाक के पातों से दोने बनाती। रघुबीर तेंदू के पातों की ढुलाई करता। आमदनी के दरवाजे खुले।

रघुबीर चौधरी दौलतराम से मिला। रामसरूप से मिला। चबूतरे पर पंचायत बुलाई गई। महिला विकास समिति को गाँव की सहकारी समिति का रूप दिया गया। यह तय किया गया कि गाँव की बंजर जमीन में पौधे लगें। साल, सागौन, महुआ, ढाक, सुबबूल, नीम, करौंदा, नीबू,नारंगी, आँवला की पौध रोपी गई। काँटेदार तार लगाकर ढोर-जानवरों से बचाव किया गया।

गाँव के वन ने रोजगार के कई दरवाजे खोले। खिलौने बनने लगे। कई दूसरे सामान बनने लगे। सहकारी दुकान पर रोजाना की जरूरत का ढेरों सामान मिलने लगा।

गाँव वालों ने महसूस किया कि गाँव की रौनक वन से ही है। वन ही देवी है, वन ही देवता है।

वन देवी, वन देवता
वन जीवन आधार,
रोजगार वन दे रहा
सुखी गाँव परिवार।।

अभ्यास 10

1. पढ़िए :

जरसी गाय खूब दूध देती है।
गेहूँ के खेत में खाद देना जरूरी है।
पीने का पानी ढँक कर रखें।
पीले रंग की चीजें खाने से रतौंधी नहीं होती।
खाली जमीन पर महुआ का पौधा रोपें।
चौपाल में ढोलक बज रही है।

2.1 नीचे लिखी चीजों में से दस ऐसी चीजों के नाम चुनकर लिखिए, जो घर में काम आती हैं :

दाना	सूप	नदी	दूध	बादल
ढोलक	चौलाई	रहट	लौकी	खिलौना
पतीली	सागौन	दरी	ढोर	सूत

1. ____________ 6. ____________

2. ____________ 7. ____________

3. ____________ 8. ____________

4. ____________ 9. ____________

5. ____________ 10. ____________

2.2. नीचे लिखे वाक्यों को सही करके लिखिए :

1. वन हमें रोजगार देते/नहीं देते हैं।
2. माताटीला बाँध कानपुर/ललितपुर में है।
3. बाँध से बिजली, पानी/घड़ियाल मिलता है।
4. चिरौंजी मँहगी बिकती/नहीं बिकती है।

____

____

____

____

गणित :

3.1. पढ़िए :

71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

3.2. 71 से 100 तक लिखिए :

____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____

____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____

____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____ ____

पाठ 11

झाँझ नगाड़ा फाग

झ ड़ (ड) फ

झ	झलक झालर झिलमिल झील झूला
ड़	बड़ा जाड़ा पेड़ पड़ोसी झाड़ू
ड	डगर डाल डीलडौल डोली डूबना
फ	फल फूल फौरन फिसलन फुरसत

रंगपंचमी

चैत के महीने का अँधेरा पाख। पंचमी का दिन। हर साल यह दिन बड़ी धूमधाम से रंगपंचमी के रूप में मनाया जाता है।

जाड़ा बीत चला। गाँव-गाँव में रंगपंचमी या फागपंचमी का मेला जुड़ गया। माधो-मलखान, रहीम-रजिया, राधा-जानकी सब फाग गाने लगे। सब के सब लाल व केसरिया रंग से सराबोर हो गये।

पंचमी के दिन झाँसी के पास बालाजी में बड़ा मेला लगता है। रंग से सराबोर हजारों नर-नारी गालों पर गुलाल मलते हैं। बड़ी-बड़ी टोलियाँ झाँझ, मँजीरा, ढोल व नगाड़े बजाती हुई निकलती हैं-

जा होरी खेलें राम लला।
हो राम लला गोविंद लला।
केसर की पिचकारी मारें।
मानो सावनी परें झूला।
जा होरी खेलें राम लला।

अभ्यास 11

1.1 नीचे दिए शब्दों में से उन शब्दों को छाँटकर एक साथ लिखिए जिसमें झ ड़ ड अथवा फ अक्षर आये हैं :

झाँसी	डोरी	फीता	घड़ी	झूला
फागुन	डलिया	झील	डीलडौल	माँझी
फूल	लड़ाई	फसल	चौड़ाई	रेलगाड़ी

झ ------- ------- ------- -------

ड़ ------- ------- ------- -------

ड ------- ------- ------- -------

फ ------- ------- ------- -------

1.2 ठीक शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए और फिर से लिखिए :

1. --------- बड़े काम का पेड़ है। (महुआ/मदार)
2. बाँस से ----------- बनाते हैं। (डलिया/झोला)
3. बरसीम ----------- चारा है। (हरा/सूखा)
4. मेहनत --------- की कुंजी है। (सफलता/मुसीबत)

2. 1. 91 से 100 तक लिखिए

______ ______ ______ ______ ______

______ ______ ______ ______ ______

2. 2.

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

पाठ 12

पेड़ लगायें

चलो-चलो सब पेड़ लगायें,
बंजर में हरियाली लायें।
देह सँवारें हम परती की,
काया बदलेगी धरती की।
एक पेड़ सौ पूत समान,
सबको देता जीवन दान।

पेड़ लगें जलवायु बदले,
घुमड़-घुमड़ कर बादल मचले।
ढेर-ढेर ईंधन मिल जाये,
फल-फूलों में कोयल गाये।

माटी रुके बहे ना आगे,
नौनी-नौनी धरती लागे।
रोगों से हर काया जीते,
सुख से सब, जनजीवन बीते।

-डॉ॰ अश्वघोष
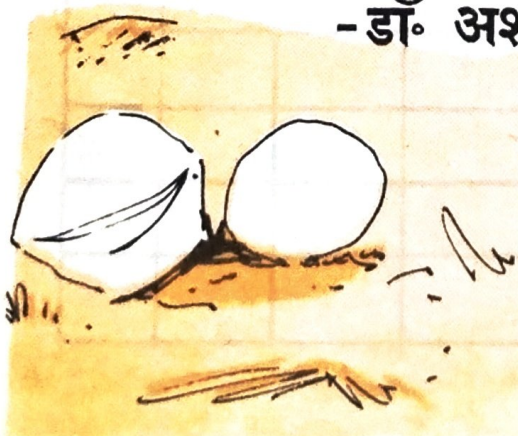
अभ्यास 12

1. वर्णों और मात्राओं को जोड़कर लिखिए :

	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं
क										
ख										
ग										
घ										
च										
ज										
झ										
ट										
ड										
त										
द										
ध										
न										
प										
फ										
ब										
म										
र										
ल										
स										
ह										

2.1 35 से 65 तक गिनतियाँ क्रम से लिखिए :

35 _ --- --- --- ---

--- --- --- --- ---

--- --- --- --- ---

--- --- --- --- ---

--- --- --- --- ---

--- --- --- --- --.65

2.2 छूटी हुई गिनतियों को पूरा कीजिए :

71 ___ 73 ___ 75 ___ 77 78 ___ ___

___ 82 ___ 84 ___ 86 ___ 88 89 90

91 ___ 93 ___ 95 ___ 97 ___ ___ ___

2.3 99 से 91 तक गिनतियाँ उल्टे क्रम में लिखिए :

___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___

2.4 दो-दो कम करके लिखिए :

30 --- --- --- --- --- --- --- --- --- ---

--- --- --- 2
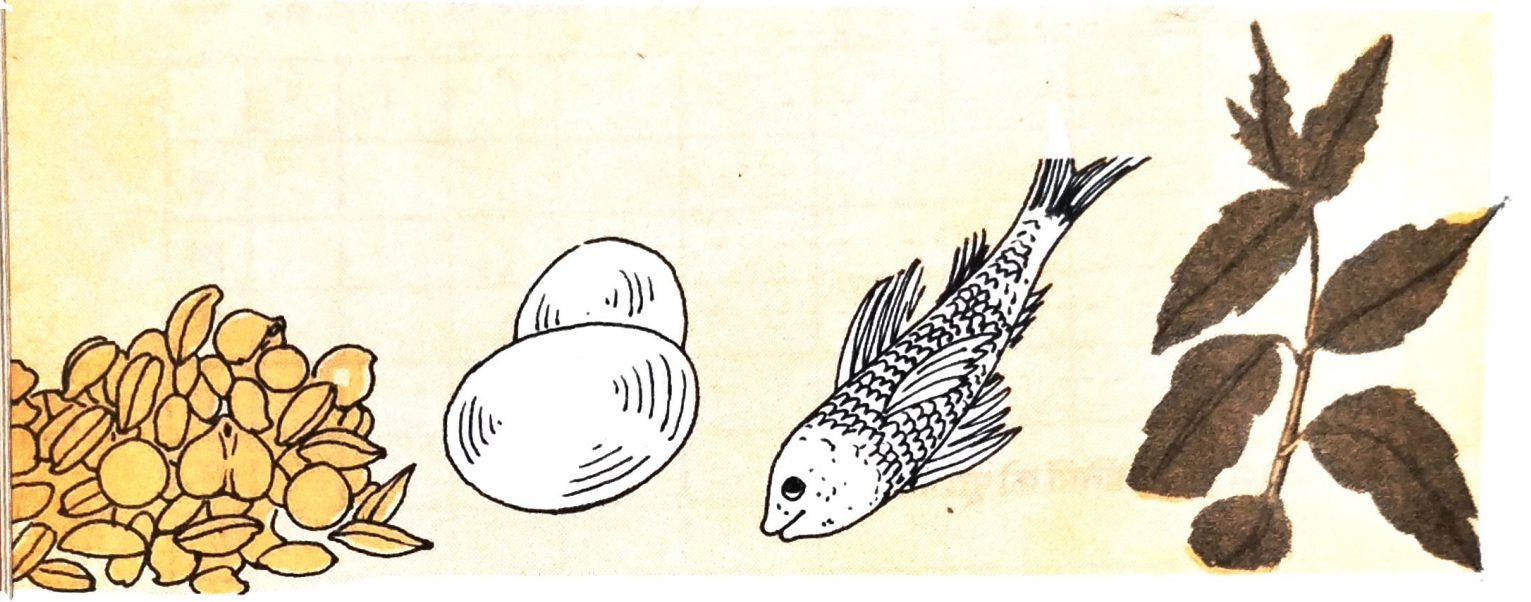
पाठ 13

अनाज अंडा मछली बथुआ

अ अं छ थ

अ — अब अलाव अटूट असुविधा असिंचित

अं — अंक अंगार अंगूर अंधेर अंकुरित

छ — छत छोटा छिलका छींक छूट

थ — थन थाली थिरकना हथेली मथानी

दोनों हँसने लगीं

मोथी घर पर थी। छबीली बहुत दिनों बाद अपनी सहेली से मिलने आई। मोथी ने छबीली को गले लगा लिया।

छबीली बोली–"बहन, तुम मजे में हो। अपना घर है। खूब अनाज है। चाँद जैसी अंजना बेटी है। फूल-सा नाथू बेटा है। छोटा-सा परिवार है–हरी-भरी फुलवारी जैसा।"

मोथी हँसने लगी। बोली–"हाँ छबीली, सब कुछ है। गाय है, बकरी है, सब दूध पीते हैं, दही खाते हैं। दही मथकर माखन खिलाती हूँ। छाछ पिलाती हूँ। अंडा, मछली जब-तब खाने में देती रहती हूँ। बथुआ का साग या बथुआ मिली रोटी बनाती हूँ। तूने ही तो बताया था–बथुआ में विटामिन ही

विटामिन है। यह विटामिन ही तो आदमी की सेहत का राज है।''

छबीली ने कहा–''तब फिर मेरे देवर की यह कविता तो याद होगी–

दूध, दही, अंडा और बथुआ,
मछली ताकत वाली।
घरनी चतुर परोसे रहती,
सुख सेहत की थाली।।''

दोनों हँसने लगीं।

अभ्यास 13

1.1 पढ़िए और लिखिए :

1. राम नाथ अपनी कमाई का पैसा डाकघर में जमा करता है।
2. छुआछूत समाज का कलंक है।
3. अंगद अपने तालाब में मछली पालता है।
4. सब एक साथ चलो। मेलजोल से काम करो।

____

____

____

____

1.2 नीचे कुछ शब्द लिखे हैं। इनमें अ, अं, छ तथा थ वर्ण आए हैं। गिनकर लिखिए, ये वर्ण कितनी-कितनी बार आए हैं :

अंकुरित अचार रथ छत अंजीर अनार

थरथर छदाम अदरक थन अंगूर मथानी

अं .... अ .... छ .... थ ....

2. पढ़िए और लिखिए :

अंगद का परिवार छोटा है। वह सुखी है। अंगद की घरवाली अंगद से पीछे नहीं है। वह परिवार को मिली-जुली दालें, मिलवाँ नाज की रोटी, हरे साग तथा मौसमी फल खिलाती रहती है। पड़ोसी लोग उससे सीख लेते हैं।

____

____

____

3.1 नीचे दिया हुआ नियम जानें :

इकाई 1 (जैसे,1 2 3 4 5 6 7 8 9)

इकहरी गिनती को इकाई कहते हैं।

दहाई 10 (जैसे, 10 20 30 से 90 तक)

सैकड़ा 100 (जैसे, 100 200 300 से 900 तक)

3 सैकड़ा 5 दहाई 4 इकाई का मतलब है : 354

3 सैकड़ा = 300, 5 दहाई = 50, 4 इकाई = 4

सब मिलाकर = 354 तीन सौ चौवन

3.2 इन्हें लिखिए और पढ़िए :

	सैकड़ा	दहाई	इकाई
532	-------	-------	-------
225	-------	-------	-------
475	-------	-------	-------
545	-------	-------	-------
620	-------	-------	-------
608	-------	-------	-------
700	-------	-------	-------
999	-------	-------	-------

पाठ 14

औरत   भोजन   पोषण

औ   भो   ष ण

औ	और औजार औसत औटना औलाद
भ	भलाई सभापति भिखारी भीड़ भूख
ष	षड़ानन भाषा अभिलाषा पोषाहार औषध
ण	कण गणपति जागरण गणित रामायण

काकी की बहू

भानमती बहू बनकर काकी के घर आई। काकी फूली न समाई। वह घर-घर कहती फिरती—मेरी बहू सुंदर है, सलीके वाली है, समझदार है। देखना, मैं बहू को अपनी पलकों पर रखूँगी।

विवाह के दो साल बाद भानमती के पाँव भारी हुए। काकी को तो जैसे कोई खजाना मिल गया—मेरी बहू माँ बनेगी। आँगन में किलकारी गूँजेगी। मैं दादी बनूँगी।

काकी भानमती के खान-पान में सावधानी बरतने लगी। भानमती को भारी काम न करने देती। कभी मेवा, कभी मसाले, कभी दूध और घी लाकर रखती रही। बहू से बारबार कहती—आजकाल खूब पोषक भोजन खाया कर। तेरी खुराक ही पेट में पलते बालक की खुराक बनेगी।

जब काकी यह बात कह रही थी, तभी मणिबाई आ गई। मणिबाई गाँव की दाई थी। मणिबाई ने कहा– काकी, मेवा-मसाले और घी-दूध से काम नहीं चलेगा। बहू को कल मेरे पास ले आना। वहाँ बहू की जाँच होगी। कुछ समय बाद कुछ टीके भी लगेंगे। बहू के खान-पान के बारे में भी बताया जायेगा। भोजन और पोषण की सावधानी सौरी के पहले, सौरी में और सौरी के बाद भी रखनी होगी। काकी, यह सब कर लोगी तो बहू की सेहत बनी रहेगी तथा बालक भी नीरोग और सुंदर होगा।

काकी दूसरे दिन बहू को लेकर दाई के पास गई।

अभ्यास 14

1.1. पढ़िए :

औजार	साग-भाजी	धनुष	जनगणना
रावण	आभूषण	भवन	नभ
औलाद	भगवान	भगवती	औषधालय
भाषा	औरंगजेब	औसत	भारत

1.2 ऊपर छपे शब्दों में से छाँटकर लिखिए कि ये वर्ण किन शब्दों में आये हैं :

ओ ______________________________

भ ______________________________

ष ______________________________

ण ______________________________

2. पढ़िए और लिखिए :

अंकुरित मूँग, अंकुरित चना ।

दूध,साग,फल खाय घना ।।

____

____

खेती के सुधरे औजार लाएँ ।

____

3.1 पढ़िए, समझिए और लिखिए :

2 दहाई + 4 इकाई = 24 6 दहाई + 5 इकाई = ...

8 दहाई + 1 इकाई = ... 9 दहाई + 9 इकाई = ...

3.2 इन्हें लिखिए और पढ़िए :

	सैकड़ा	दहाई	इकाई
225	2	2	5
532	....	....	....
475	....	....	....

3.3 लिखिए :

5 सैकड़ा 4 दहाई 7 इकाई = --------

6 सैकड़ा 9 दहाई 6 इकाई = --------

पाठ 15

नेत्र   इलाज   ऐनक
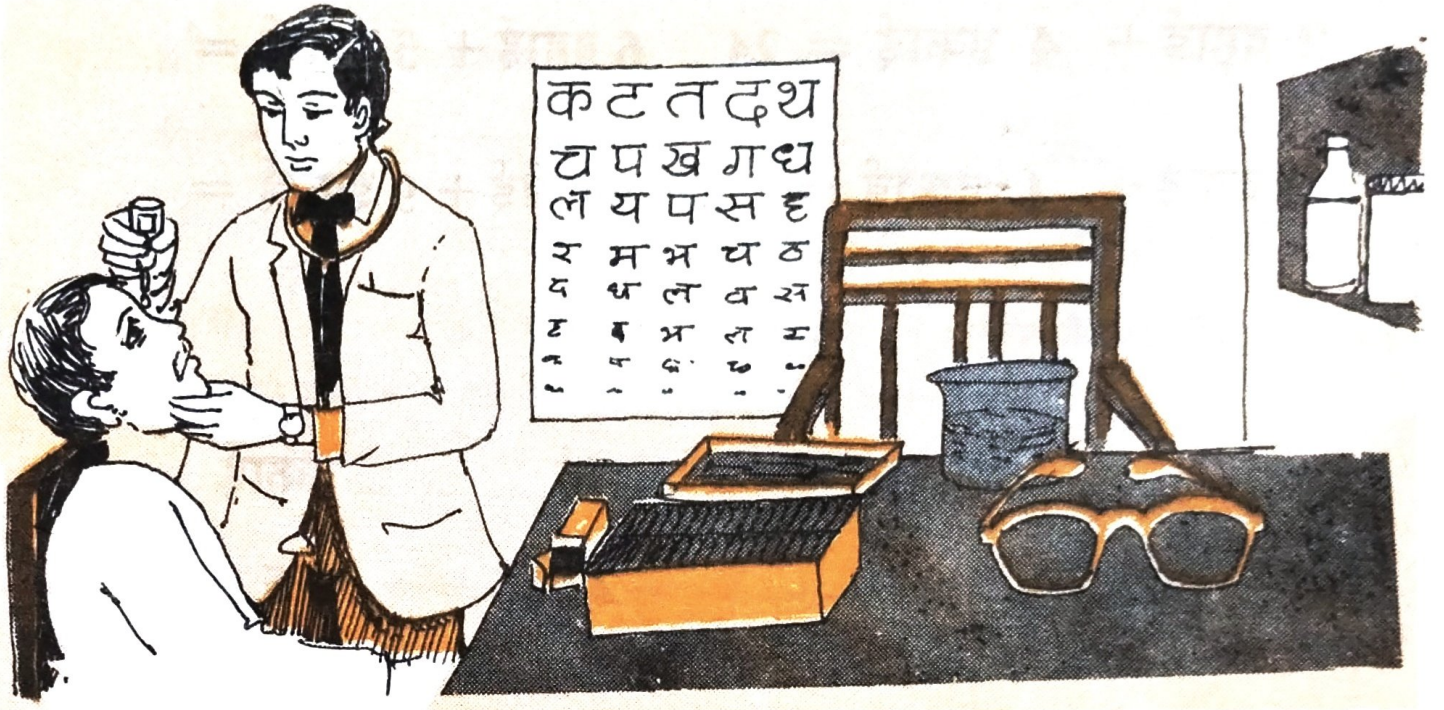
त्र   इ   ऐ

त्र	पत्र यात्रा त्रिलोक मंत्री छत्रसाल
इ	इत्र इनाम इमारत इंसान इंदिरा
ऐ	ऐसा ऐतिहासिक ऐरावत ऐलान

सही इलाज

साँझ होते ही इसुरी टटोल-टटोल कर चलती थी। दरवाजे से टकराकर वह गिर भी पड़ी थी।

यह देखकर छत्रपाल चिंतित हो गया। छत्रपाल ने मैना से कहा – तुम इसुरी को लेकर खेत पर जाती हो और साँझ देर से लौटती हो। लगता है, राह में कुछ हो गया। मैं अभी एतवारी चाचा को बुलाता हूँ।

एतवारी आया। झाड़-फूँक की, लेकिन इसुरी को कोई फायदा न हुआ। इससे छत्रपाल और भी चिंतित हुआ।

इतने में मोहिनी आई और बोली–चाचा, मैं कल भी आई थी, आपसे मुलाकात नहीं हुई। मैंने सुना है, आपकी बिटिया इसुरी को शाम के समय दिखाई नहीं देता। वह टटोल-टटोल कर चलती है।

कल पंचायत घर में बाहर से आँखों की जाँच करने वाले आयेंगे। दवा देंगे। जिनको जरूरत होगी, ऐनक भी देंगे। मैं यही बताने आई हूँ। आप इसुरी को वहाँ जरूर दिखा दें।
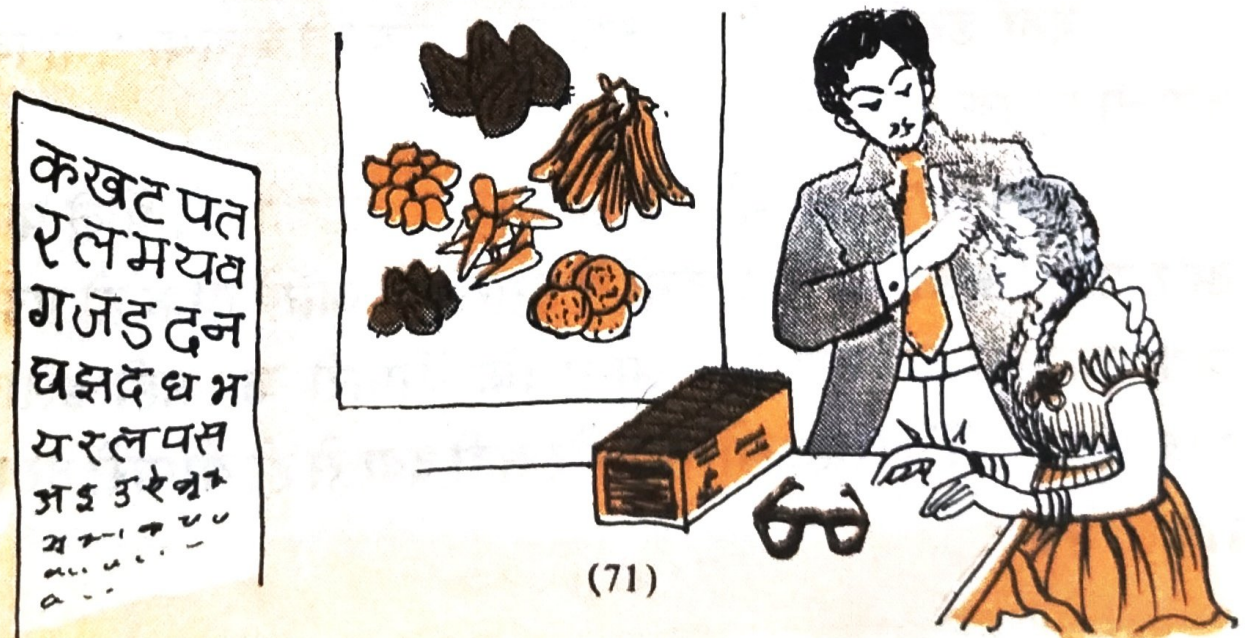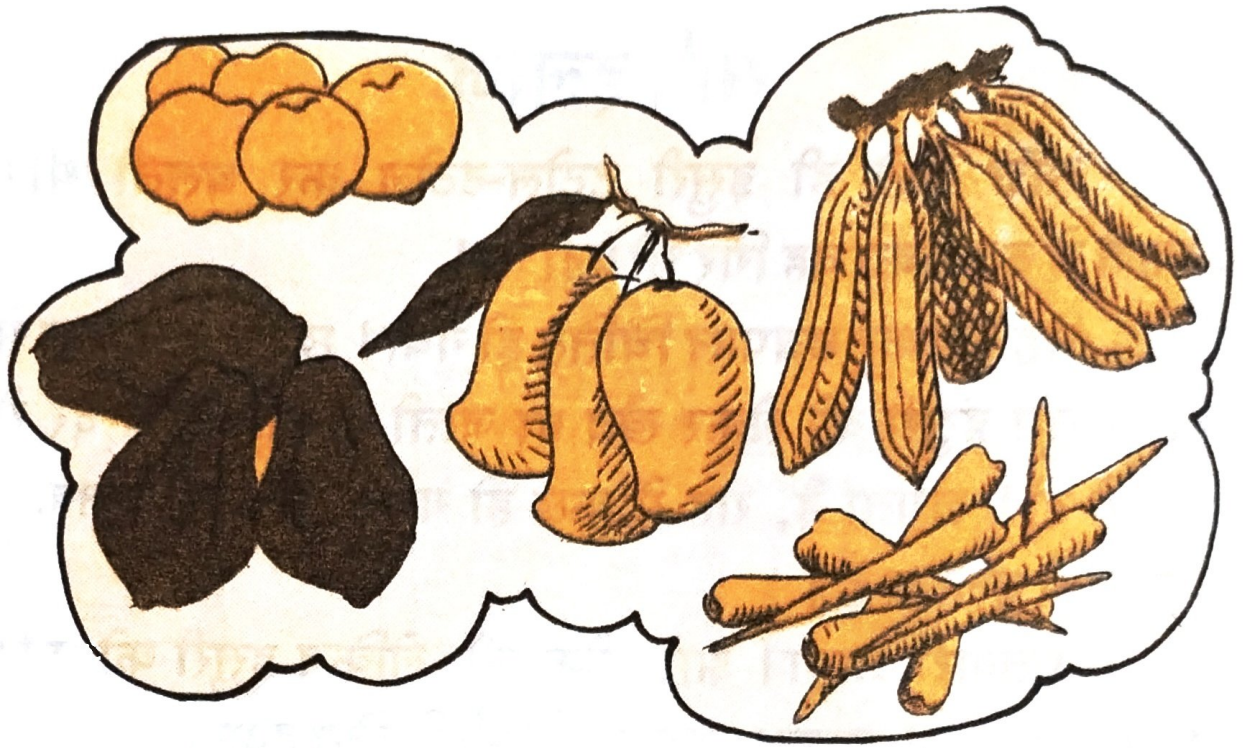
दूसरे दिन छत्रपाल इसुरी को लेकर गया। पंचायत-घर में इसुरी के नेत्रों की जाँच हुई। वहाँ बताया गया कि लड़की को रतौंधी की बीमारी है। यह बीमारी भोजन में कुछ कमी रह जाने से हो जाती है। आप इसे पीले रंग वाली चीजें, जैसे–पपीता, आम, गाजर खिलाइए। मौसम के फल और हरे साग भी खिलायें । कुछ दिनों में फायदा हो जायेगा। यही इस बीमारी का सही इलाज है।

वहाँ इसुरी को दवा पिलाई गई। यह भी बताया गया कि अगली खुराक कब और कहाँ मिलेगी।

छत्रपाल इसुरी को घर ले आया। लड़की को पीले फल और साग खिलाये। थोड़े दिनों में इसुरी की आँखें ठीक हो गईं। अब छत्रपाल की समझ में आया कि बीमारी का सही इलाज झाड़-फूँक नहीं है।सही भोजन और सही दवा से ही बीमारी दूर हो सकती है।

अभ्यास 15

1.1 नीचे लिखे शब्दों में त्र, इ और ऐ वर्णों को गिनिए और उतनी ही बार इन वर्णों को लिखिए :

जनतंत्र	इमारत	ऐरावत	लोकतंत्र
इलायची	इलाहाबाद	ऐतिहासिक	मंत्र
पत्र	ऐलान	गणतंत्र	

त्र -

इ -

ऐ -

1.2 नीचे लिखे शब्दों में एक-एक वर्ण छूट गया है। इन्हें 'त्र' 'इ' अथवा 'ऐ' से पूरा कीजिए और पूरा शब्द फिर से लिखिए :

---जलास	------	---मली	--------
मं ी	------	---नक	--------
---टम बम	------	पु	--------
ि भुवन	------	---कलाब	--------

2. पढ़िए और लिखिए :

- तंत्र-मंत्र से बीमारी नहीं जाती है।
- बीमार होने पर सही इलाज कराना जरूरी है।
- झाँसी ऐतिहासिक जगह है।

____

____

____

3. जोड़िए :

जोड़ का मतलब है कि किसी गिनती से उतना आगे गिनना जितना जोड़ना है। + जोड़ का चिन्ह होता है, सीखिए। जैसे :

$$\begin{array}{r} 5 \\ +4 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

पाँच में चार जोड़ने का अर्थ है, पांच के आगे की चार गिनतियाँ गिनकर आखिरी गिनती लिखना अर्थात् **6, 7, 8, 9** यही **9** उत्तर है।

$$\begin{array}{r} 5 \\ +4 \\ \hline 9 \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 6 \\ +2 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 4 \\ +5 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 2 \\ +4 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 3 \\ +1 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 2 \\ +6 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 5 \\ +6 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 7 \\ +11 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 12 \\ +11 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 13 \\ +12 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 10 \\ +14 \\ \hline 24 \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 13 \\ +8 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 18 \\ +13 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 28 \\ +15 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 45 \\ +25 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 42 \\ +38 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 37 \\ +38 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 33 \\ +39 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 18 \\ +39 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

पाठ 16

ऊन उधार ऋण मशीन

ऊ उ ऋ श

ऊ	ऊसर ऊदल ऊँचा कमाऊ टिकाऊ
उ	उमर उदार उजाला उचित उरई
ऋ	ऋषि ऋतु ऋतुराज ऋण उऋण
श	शहद शिकार शीशम शान अशोक

भड़ारी की कायापलट
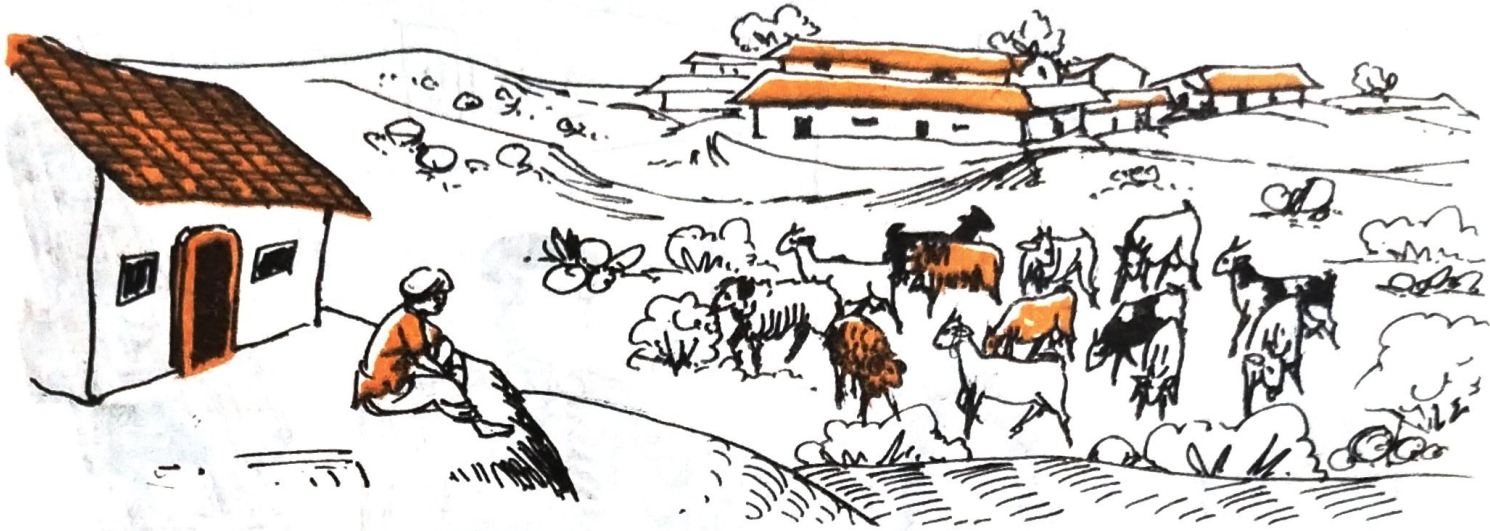
बहुत पुरानी बात नहीं है। कुछ साल पहले तक भड़ारी गाँव गरीबी में डूबा हुआ था। ऊबड़-खाबड़ जमीन और पानी की कमी। खेती का कोई साधन नहीं था। किसी-किसी के पास दो-चार बकरियाँ थीं, पर वे भी सुधरी जाति की नहीं। अधिकतर गाँव वाले इधर-उधर मजदूरी करके किसी तरह दो समय की रोटी जुटा पाते थे।

इसी बीच बाहर के कुछ लोग भड़ारी पहुँचे। ये सरकारी सेवक थे। उन लोगों ने गाँव वालों को जुटाया। सबके हाल-चाल पूछे। लोगों ने अपनी-अपनी परेशानी बताई।

उनकी बातें सुनकर बाहर से आये लोगों में से कोई बोला-हमें आपकी परेशानियाँ और अड़चनें दूर करने को भेजा गया है। आप लोग बकरी पालने का काम आसानी से कर सकते हैं। इसमें बड़ा फायदा है। बकरियों से दूध मिलेगा, ऊन मिलेगी। चाहें तो उनके मेमनों को बेच भी सकते हैं।

यह सुनकर गाँव के मुखिया हलकू ने कहा-बात तो आप ठीक कहते हैं लेकिन जब दो समय की रोटी ही नही जुट पाती तो हम भेड़-बकरी कहाँ से खरीदेंगे ?

इस पर बाहर से आया हुआ दूसरा आदमी खड़ा हुआ और बोला-इसी की सुविधा जुटाने को मैं आया हूँ। मुझे बैंक ने भेजा है। आप लोग बैक से ऋण लेकर बकरी खरीद सकते है। यह ऋण धीरे-धीरे आसानी से चुकाया जा सकता है। इधर-उधर से उधार लेने की कोई जरूरत नहीं है।

इतने में तीसरा आदमी खड़ा हुआ। उसने बताया कि वह सुधरी जाति की बकरियाँ खरीदने में गाँव वालों की मदद करेगा। उनके रखने-पालने के नये तरीके भी बतायेगा। ऊन निकालने और उसे बेचने में भी वह मदद कर सकता है।

ये बातें गाँव वालो के दिल में उतर गईं जैसे उनको बताया गया था, उसी तरह उन लोगों ने काम किया। नतीजा सामने है। अब कोई बाहर मजदूरी करने नहीं जाता। गाँव में सहकारी समिति बन गई है। समिति से ऋण लेकर ऊन की कताई-बुनाई की मशीनें भी खरीद ली हैं। लोग अपने ही गाँव में धंधे से लगे हुए हैं और सुख से खाते-पीते हैं।
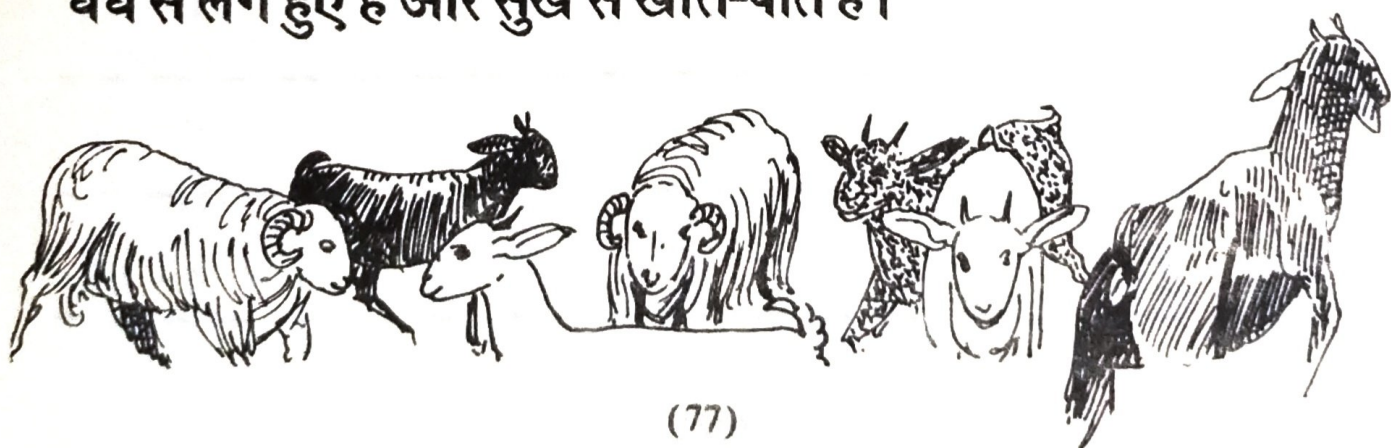
अभ्यास 16

1. इन शब्दों को ध्यान से पढ़िए :

ऊदल ऊख उजाला उरद ऊसर उरई
शरीफा गणेश ऋषिकेश शकर ऋण ऋतुराज

2. अब इन शब्दों में से उन चीजों का नाम लिखिए जिनको खाया जाता है।

____

3. नीचे कुछ अधूरे वाक्य दिए हुए हैं। चौखटे में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर उन वाक्यों को पूरा कीजिए और लिखिए :

महोबा	ऋण	उरई	चीनी

ऊदल ----- के बहादुर थे। माहिल --- का सरदार था।
बैंक से ही -- लेना उचित है। ईख से -- बनाई जाती है।

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

4. घटाइए :

घटाना जोड़ के विपरीत क्रिया है। जोड़ में आगे को गिनते हैं पर घटाने में पीछे को। – घटाना का चिंह है, सीखिए। जैसे–
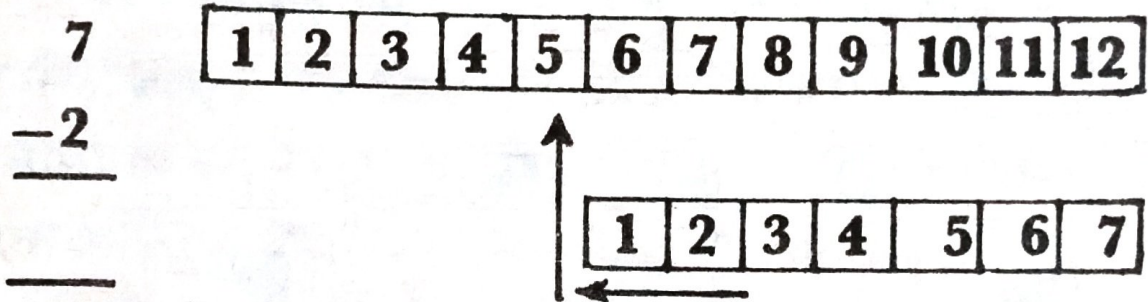
सात में से दो घटाने की क्रिया में सात से पीछे की ओर दो गिनतियाँ गिनीं अर्थात् 7, 6 इसके बाद की गिनती 5 है। यही जवाब है।

6	5	9	8	7
−3	−2	−5	−3	−4
____	____	____	____	____

9	9	9	9	9
−1	−2	−3	−4	−5
____	____	____	____	____

8	8	8	8	8
−1	−2	−3	−4	−5
____	____	____	____	____

पाठ 17
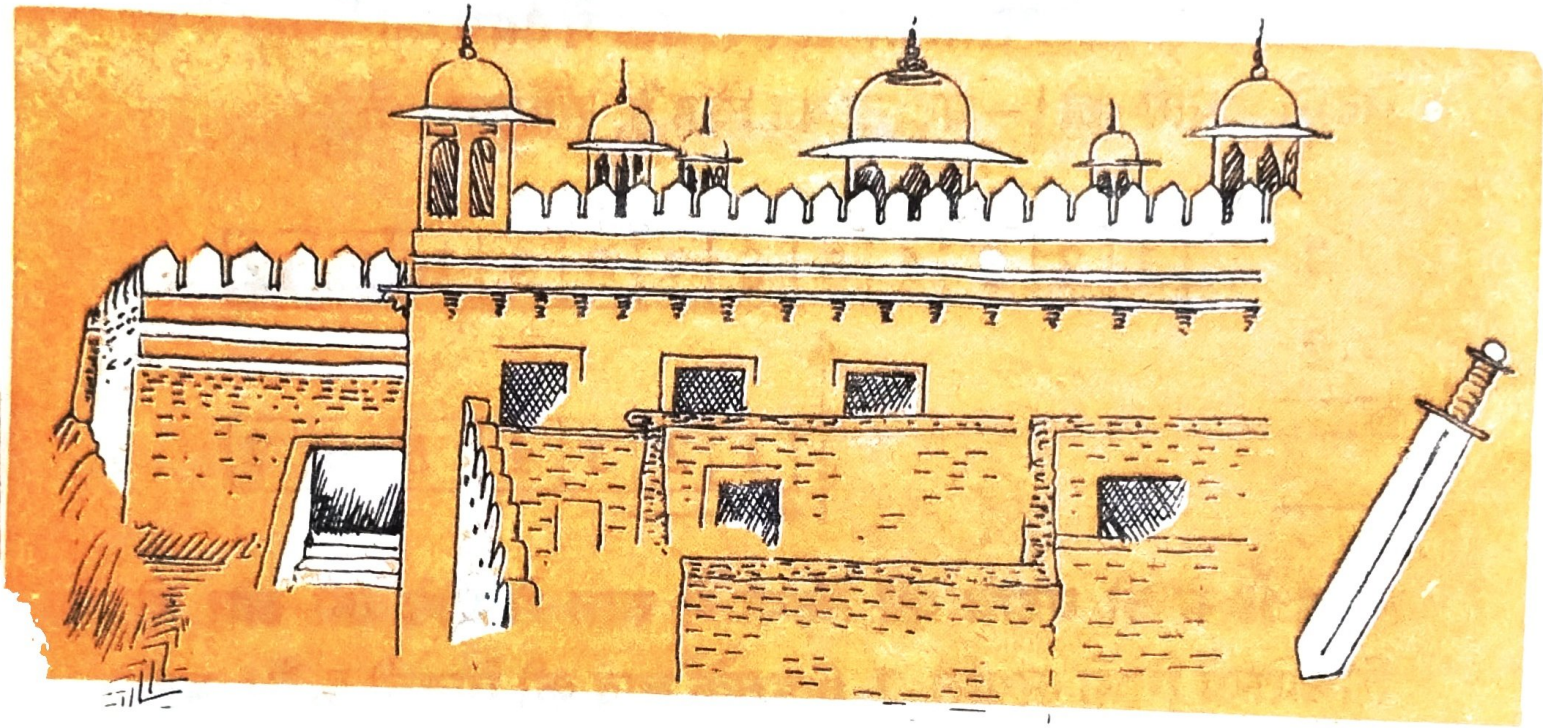
गढ़ ओरछा कृपाण

ढ़ ओ ृ

ढ़ | पढ़ना कढ़ाई गढ़ी सीढ़ी साढ़ू

ओ | ओस ओला ओखली ओसारा ओढ़नी

ृ | गृह कृपा कृषि मातृभूमि शृंगार

छत्रसाल

ओरछा के महाराजा छत्रसाल का बड़ा नाम है। वे वीर भूमि बुंदेलखंड के अमर सपूत थे। वे बड़े बहादुर थे और अपने फैसले पर हमेशा दृढ़ बने रहते थे।

वीर छत्रसाल को कभी भी गुलामी कबूल नहीं थी। वे छत्रपति शिवाजी के सहयोग से अकेले ही मुगलों पर चढ़ाई करने को तैयार हो गये थे। इस वीर ने कड़ी से कड़ी मुसीबतें झेलकर भी अपना अलग से राज कायम कर लिया था। किसी कवि ने इनके राज की सीमाओं के बारे में कहा है कि—

इत यमुना उत नरमदा, इत चंबल उत टौंस।
छत्रसाल सों लड़न की, रही न काहू हौंस।।

महाराज छत्रसाल कुशल सेनानी तो थे ही, कुशल शासक भी थे। वे अपनी मातृभूमि के बहुत बड़े सेवक थे। उनका हृदय भी बड़ा उदार था। वे कवियों का बहुत आदर करते थे। महाकवि भूषण का नाम कौन नहीं जानता? वे वीर-रस के जाने-माने कवि थे। जब वे अपनी कविता पढ़कर सुनाते थे तो महाराजा छत्रसाल का हृदय वीर-रस से सराबोर हो जाता था। यही बात थी कि महाराजा छत्रसाल उनका बहुत ही आदर-मान करते थे।

महाराज छत्रसाल कलम के धनी थे और कृपाण के भी। बुंदेलखंड के लोग आज भी उनको देवता की तरह मानते हैं। इनकी वीरता, दृढ़ता और उदारता के गीत बुंदेलखंड के कोने-कोने में गूँजते हैं। ओरछा का गढ़ आज भी अपना सीना ताने खड़ा है। वह बुंदेलखंड के वीर केशरी महाराजा छत्रसाल की शूर-वीरता की अमर निशानी है।

अभ्यास 17

1. 1. पढ़िए और लिखिए :

पढ़ना	ओढ़नी	ओरछा	मढ़िया
मृदंग	हृदय	ओखली	आढ़त
बाढ़	नृपति	ओंकार	अमृत
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

1. 2. ओरछा ऐतिहासिक जगह है जहाँ के नृपति बड़े बहादुर थे। जगह-जगह गढ़ बनवाया था। ये गढ़ लड़ाई के काम आते थे।

- रहीम, रतन और फुलिया को सात-सात किलोग्राम गेहूँ दिया गया। कुल कितना गेहूँ दिया गया ?

$7+7+7=21$ किलोग्राम

इसे इस तरह भी लिख सकते हैं

$7 \times 3 = 21$ किलोग्राम

*गुणा कीजिए :

$$\begin{array}{r} 5 \\ \times 4 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 6 \\ \times 3 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 2 \\ \times 8 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 4 \\ \times 7 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 5 \\ \times 6 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

पाठ 18

वीर भूमि

इस धरती का गौरव गाओ, यह धरती बलिदानी है।
दौड़ रहा रग-रग में इसके , बुंदेलों का पानी है।

इसे न कोई मात दे सका, तलवारों के घेरों में।
इसका तेवर दीप सरीखा, जलता रहा अँधेरों में।

आओ नमन करें सब इसको, यह साकार भवानी है।
दौड़ रहा रग-रग में इसके, बुंदेलों का पानी है।

इसके बेटे वीर-बाँकुरे, आजादी इसका पैगाम।
बेमिसाल रणनीति यहाँ की, इतिहासों में जिसका नाम।

दरिया दिल में शूर-वीरता, इसकी अमर निशानी है।
इस धरती का गौरव गाओ, यह धरती बलिदानी है।

यह रणचंडी हरबोलों की, नदी बेतवा इसका हार।
नगर ओरछा इसका दमखम, झाँसी है इसकी ललकार।

गूँज रही कण-कण में इसके, जौहर भरी कहानी है।
इस धरती का गौरव गाओ, यह धरती बलिदानी है।

-डॉ॰ अश्वघोष

अभ्यास 18

1.1 वर्णों और मात्राओं को मिलाकर लिखिए:

	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं
क										
ख										
ग										
घ										
च										
ज										
ट										
त										
भ										
न										
प										
ब										
म										
ल										
स										

2.1. हल कीजिए :

- रामू ने 21 रुपए में 3 मीटर कपड़ा खरीदा। एक मीटर कपड़े का दाम कितना था ?

21 ÷ 3

3)21(7
 21

  X

24 ÷ 6 = ...	25 ÷ 5 = ...
36 ÷ 9 = ...	45 ÷ 5 = ...
44 ÷ 4 = ...	72 ÷ 8 = ...
55 ÷ 5 = ...	27 ÷ 3 = ...
35 ÷ 7 = ...	40 ÷ 8 = ...
42 ÷ 6 = ...	49 ÷ 7 = ...
50 ÷ 10 = ...	70 ÷ 10 = ...

पाठ 19
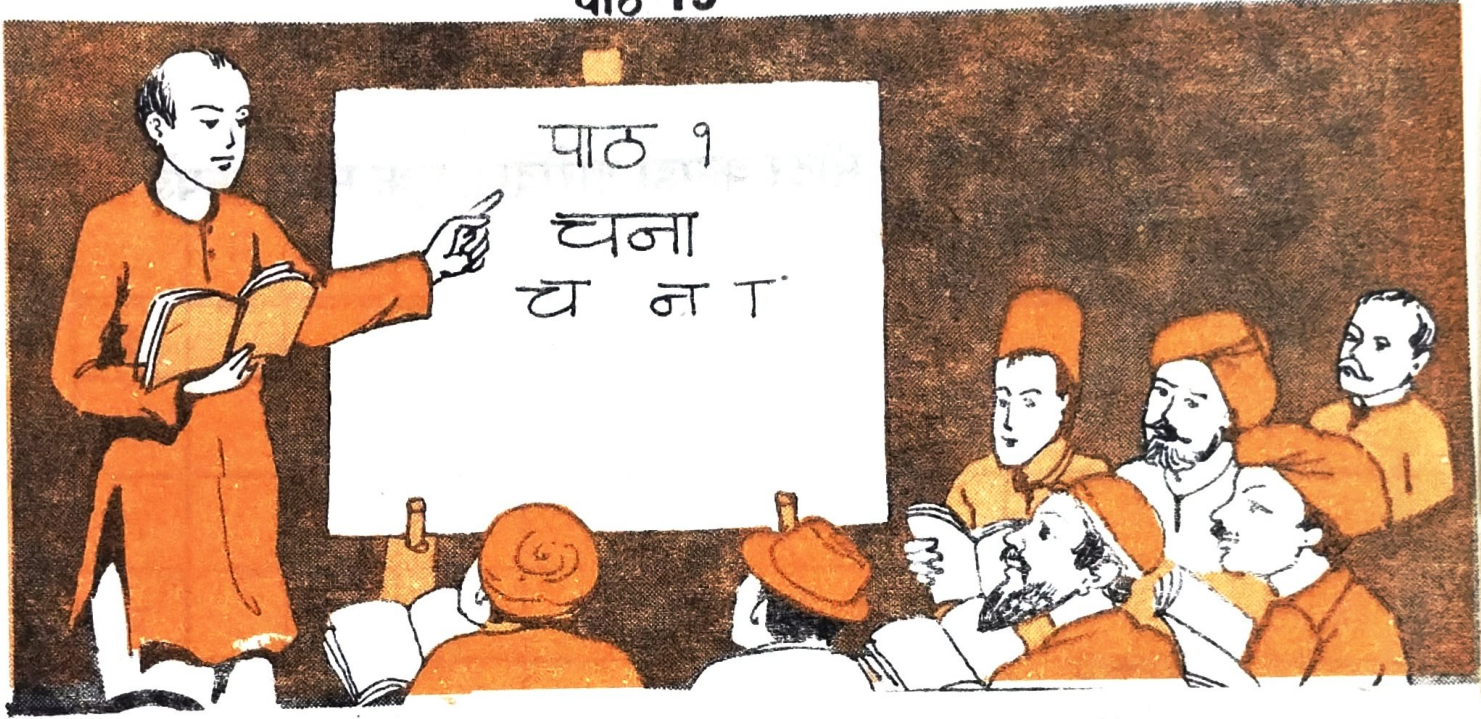
शिक्षा पाठ ज्ञान एकता

क्ष ठ ज्ञ ए

क्ष	क्षमा	साक्षर	पक्षी	क्षेत्र	सुरक्षा
ठ	ठसक	पठार	ठुमरी	ठेला	ठंडक
ज्ञ	ज्ञानी	यज्ञ	आज्ञा	विज्ञान	ज्ञानवान
ए	एक	एकांत	एकटक	एकड़	एकाएक

हम सब फूल एक गुलशन के

रक्षपाल मुखिया के गाँव में दो साक्षरता कक्षाएँ चलती थीं– एक थी निरक्षर महिलाओं के लिए और दूसरी, निरक्षर पुरुषों के लिए। इन कक्षाओं को चलते-चलते एक सत्र पूरा हो गया था। पुरुषों की साक्षरता-कक्षा के शिक्षक थे – ज्ञानीराम और महिलाओं की साक्षरता-कक्षा की शिक्षिका थी ज्ञानवती।

सत्र पूरा हो जाने पर ज्ञानीराम और ज्ञानवती ने मिलकर यह तय किया कि दोनों पाठशालाओं का एक सालाना जलसा किया जाए।

पूरे गाँव में उमंग की लहर दौड़ गई। आसपास के गाँवों के लोगों को निमंत्रण-पत्र भेजे गए। लोग बड़ी संख्या में जलसे में शामिल हुए।

सूबे के माननीय शिक्षा मंत्री जी इस जलसे के सभापति थे। जलसे का समय दोपहर दो बजे रखा गया था। शिक्षा मंत्री जी ठीक समय पर पधारे। जलसा शुरू हुआ।

साक्षरता-कक्षा की महिलाओं ने गीत गाया :

हम सब फूल एक गुलशन के
एक हमारी धरती सब की,
जिसकी माटी में जनमे हम।

मिली एक सी धूप हमें है,
सींचे गए एक जल से हम।
रहते नीचे एक गगन के,
हम सब फूल एक गुलशन के।

इसके बाद शिक्षा मंत्री जी का भाषण शुरू हुआ– मेरे भाइयो और बहनो! मुझे आपकी साक्षरता-कक्षाओं को देखकर बेहद खुशी हुई है। आपने यहाँ जो शिक्षा पाई है, जो ज्ञान हासिल किया है, उस सबके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। आपने यहाँ एकता का पाठ सीखा ही नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारा भी है। उसके लिए आप सबकी दिल से सराहना करता हूँ।

माननीय शिक्षा मंत्री जी ने जैसे ही अपना भाषण समाप्त किया, सारा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।
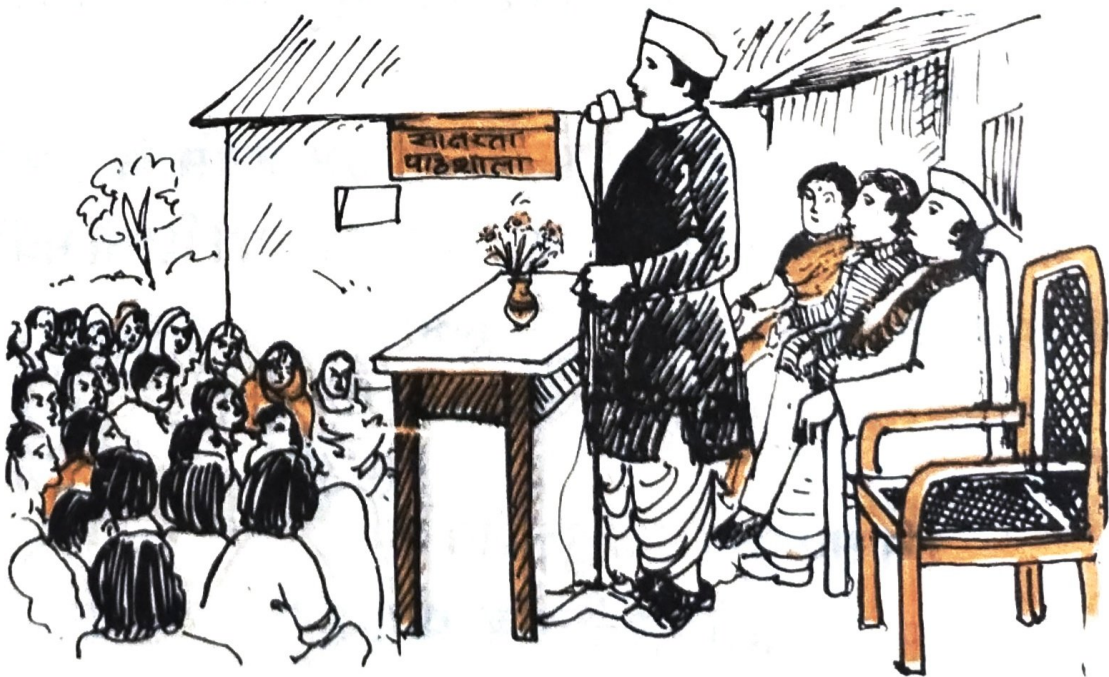
अभ्यास 19

1. नीचे लिखे शब्दों में से क्ष ठ ज्ञ और ए को गिनिए और उतनी ही बार लिखिए :

अक्षर	साक्षर	कठौता	लक्षण
कुठला	यज्ञ	गुणज्ञ	एकड़
एकांत	नक्षत्र	गठरी	कोठरी
एकता	एकदम		

क्ष ______ ______ ______ ______

ठ ______ ______ ______ ______

ज्ञ ______ ______ ______ ______

ए ______ ______ ______ ______

2. क्ष ठा ज्ञ ए जोड़कर शब्द पूरे कीजिए :

अ — र	आ — ा	— कुर	अंगू —
- - - -	- - - -	- - - -	- - - -
— ड़ी	— कांत	प — ी	— क
- - - -	- - - -	- - - -	- - - -

3. नीचे लिखे वाक्यों को लिखिए :

1. शिक्षा शोषण से छुटकारा दिलाती है।

____

2. शिक्षा से विकास का दरवाजा खुल जाता है।

____

4.1. बीस रुपये और पच्चीस पैसे को इस तरह लिखते हैं :

रु. 20.25 या रुपए पैसे

20 . 25 रुपए पैसे

लिखिये :

- पच्चीस रुपए पचास पैसे रु. .... या ....
- साठ रुपए पचहत्तर पैसे रु. .... या ....
- पैंतीस रुपए तीस पैसे रु. .... या ....

ध्यान रहे, एक रुपए में 100 पैसे होते हैं।

- एक रुपए पाँच पैसे को इस तरह लिखते हैं :– रु. 1.05

लिखिए:

- पाँच रुपए आठ पैसे = रु. ....
- तेरह रुपए पाँच पैसे = रु. ....

नोट :–शब्दों में लिखी धनराशि को अनुदेशक पढ़कर बताएँ।

4.2. जोड़िए :

रुपए	पैसे		रुपए	पैसे		रुपए	पैसे
15	25		28	15		64	65
+18	40		+27	65		+69	65
33	65						

रुपए	पैसे		रुपए	पैसे		रुपए	पैसे
66	70		89	80		28	60
+89	75		+18	65		+68	55

पाठ 20

संयुक्ताक्षर

(पाई हटाकर बनने वाले)

ख्	संख्या	तख्त	दरख्त	जनसंख्या
ग्	ग्वाला	ग्वारफली	ग्यारह	सुग्गा
घ्	विघ्न	कृतघ्न	शत्रुघ्न	
च्	जच्चा	बच्चा	सच्चा	अच्छा
ज्	ज्वार	उज्जैन	ज्योति	सज्जन
ण्	पुण्य	कण्व	अरण्य	नगण्य
त्	त्याग	पत्ता	पत्थर	सत्य
थ्	तथ्य	पथ्य	मिथ्या	नेपथ्य
ध्	ध्यान	ध्वनि	अध्यापक	
न्	न्याय	उन्नति	कन्या	धन्यवाद

अपने हाथ की बात

सुग्गी और पन्ना सगी बहनें थीं। दोनों की सेहत अच्छी थी। माता-पिता ने दोनों कन्याओं को बड़े लाड़ से पाला था। समय आने पर उनका विवाह किया। सुग्गी को पति मिले सत्यवीर, जो अध्यापक थे। पन्ना का विवाह खाते-पीते किसान शत्रुघ्न सिंह के साथ हुआ।

दोनों बहनें अपने-अपने परिवारों में रम गईं। सत्यवीर पढ़े-लिखे थे, सज्जन थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि परिवार की संख्या सीमित रहेगी, तभी जीवन सुखी हो सकता है। उन्होंने सुग्गी को पढ़ने के लिए उत्साहित किया। सुग्गी ने घर-परिवार के संबंध में अच्छी-अच्छी बातें सीखीं। वहीं पर उसे यह भी ज्ञात हुआ कि परिवार को सीमित करना अपने हाथ की बात है। आज उसके दो बच्चे हैं—एक है कन्या-धनवंती और एक है पुत्र,जिसका नाम है- तख्तमल।

समय बीतते देर नहीं लगती। धनवंती अट्ठारह की हो गई। सत्यवीर ने कन्या के लिए वर भी ढूँढ़ लिया। विवाह की तिथि तय हो गई। शत्रुघ्न सिंह को सपरिवार न्योता भेजा गया। दोनों बहनें सालों से मिल नहीं पाई थीं। सुग्गी बहुत खुश थी कि पन्ना से उसकी भेंट होगी।

लेकिन जब शत्रुघ्न सिंह और पन्ना अपने पाँच बच्चों को लेकर पहुँचे तो पन्ना की हालत देखकर सत्यवीर और सुग्गी दोनों

सन्न रह गए। दोनों बहनें गले मिलीं। पन्ना खूब रोई। कुछ समय बाद एकांत में बैठकर दोनों में सुख-दुख की बातें होने लगीं।

पन्ना बोली–मैं तो भगवान की इस देन से तंग आ गई हूँ। हर दो साल पर एक बच्चा। अब तो न खेती के काम की रह गई, न बच्चों को पालने के। जिंदगी दूभर हो गई है।

उसकी बातें सुनकर सुग्गी ने कहा–पन्ना, भगवान को किस लिए कोसती हो। यह सब तो अपने हाथ की बात है। मुझे देखो न, हम लोगों ने परिवार दो ही बच्चों तक सीमित रखा है। जो भी सुखी रहना चाहे, उसे यही करना होगा।

अभ्यास 20

1. नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए और लिखिए :

जनसंख्या ------ ---- ------ ------

सुग्गा ------ ---- ----- ----

शत्रुघ्न ----- ----- ------ ------

बच्चा ------ ----- ------ -----

पुण्य ----- ----- ------ -----

पत्थर ------ ------ ----- -----

अयोध्या ------ ----- ----- ------

कन्या ------ ----- ----- -----

ज्योनार ------ ---- ---- ----

2. नीचे दिये हुए शब्दों में से नीचे की पंक्तियों में खाली जगहें भरिए :

विख्यात जच्चा बच्चा पुण्य सत्य ध्यान

1. माताटीला बाँध सारे देश में .... है।

2. .... और .... को टीका लगाना जरूरी है।

3. दूसरों की मदद करना .... का काम है।

4. हमेशा .... बोलना चाहिए।

5. ईश्वर का ...... करना चाहिए।

पाठ 21

संयुक्ताक्षर

(पाई हटाकर बनने वाले)

प्	प्यास	कुप्पी	प्याज	सप्ताह
ब्	बब्बा	डिब्बा	मुरब्बा	सब्जी
भ्	सभ्य	अभ्यास	भीड़ भभ्भड़	सभ्यता
म्	म्यान	अम्मा	सम्मान	साम्यवाद
ल्	गल्ला	आल्हा	संकल्प	बल्ब
व्	व्यापार	अव्वल	व्यायाम	कव्वाली
श्	श्याम	ईश्वर	श्लोक	विश्व
ष्	मनुष्य	भविष्य	पुष्प	इष्ट
स्	स्त्री	पुस्तक	स्कूल	संस्कार
क्ष्	लक्ष्मी	लक्ष्मण	लक्ष्य	साक्ष्य

पश्चाताप

(लल्लू उदास बैठा है। प्यारे उसके पास आकर बैठता है।)

प्यारे : लल्लू, कोई खास बात है ? आज उदास बैठे हो !

लल्लू : भैया, कैसे बताऊँ । बड़े मन से बिटिया ब्याही थी। अब बिटिया की ससुराल वालों ने उसे वापस भेज दिया है ।

प्यारे : वापस भेज दिया !

लल्लू : हाँ ! कहते हैं, जो कुछ बाकी रह गया है, वह सारा दहेज लेकर आओ ।

प्यारे : तो कुछ बाकी रह गया था ?

लल्लू : हाँ, हमारी यही बेइज्जती बाकी रह गई थी। तुम तो जानते हो, मेरा बड़ा लड़का मंगल शादी-ब्याह में दहेज के खिलाफ है। इस शादी में भी खिलाफ था ।
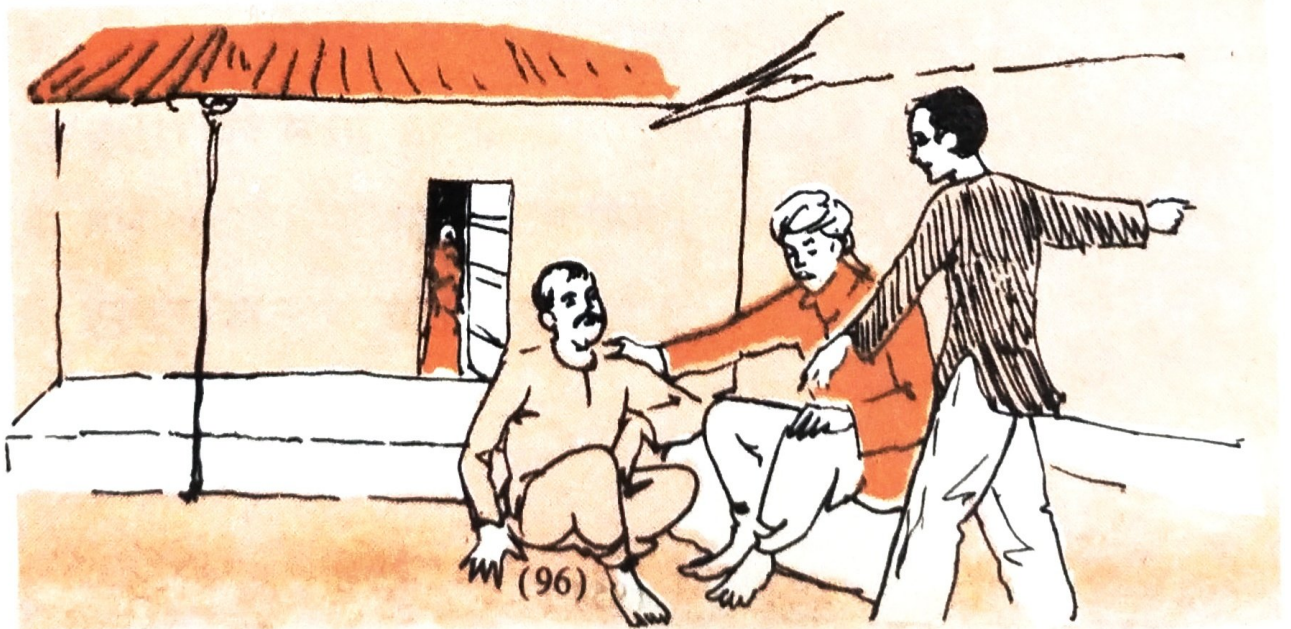
प्यारे : तो फिर ?

लल्लू : उस समय तो हमने बिटिया का ब्याह कर दिया। परन्तु अब,जब बिटिया वापस आ गई तो मंगल पुलिस में शिकायत करने गया है। कल का गया है, कुछ कर के ही आएगा।

(लल्लू का दामाद पुत्तन आता है।)

पुत्तन : मंगल को जो करना था, कर दिया चाचा। हमारे बापू को पुलिस पकड़कर ले गई।

लल्लू : (हड़बड़ाकर उठते हुए) अरे! ऐसा कैसे हो सकता है लाला ?

पुत्तन : जो होना था, वह हो गया चाचा। जैसा किया, वैसा पाया। मैं होता तो आपकी बेटी को इतना अपमानित न होना पड़ता। अब जब तक आपकी बेटी थाने पर नहीं चलेगी और यह नहीं कहेगी कि मुझसे दहेज नहीं माँगा गया था, तब तक बापू नहीं छूटेंगे।

(मंगल आता है।)
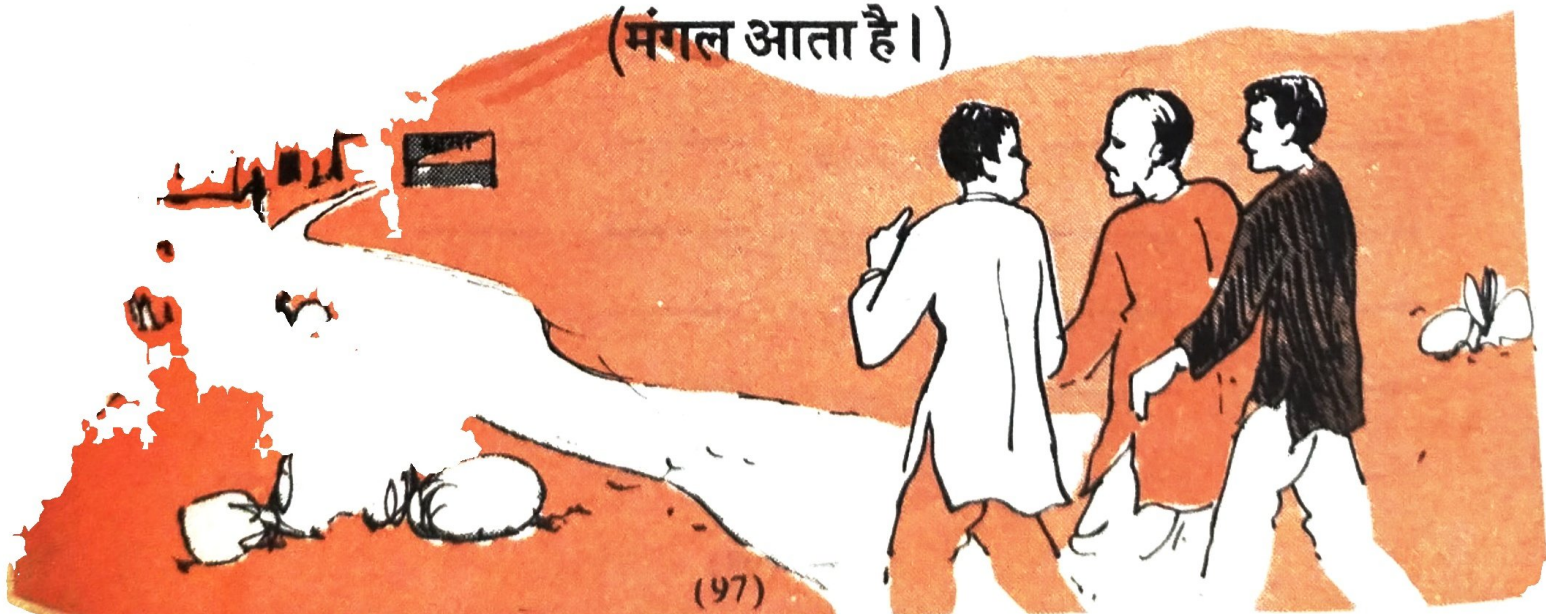
मंगल : तुम्हारे बापू छूटें, चाहे हमेशा जेल में रहें, मेरी बहन झूठ नहीं बोलेगी।

पुत्तन : नहीं मंगल, मैं अपने बापू और अपने परिवार की ओर से माफी माँगता हूँ। अब आगे से तुम्हारी बहन अपमानित नहीं होगी।

मंगल : अपमानित तो हो ही गई !

पुत्तन : मैं घर में था नहीं, अपनी बहन से पूछ लो। दहेज की बात आने पर मैं स्वयं बापू से लड़ चुका हूँ। अब थाने पहुँचने के बाद बापू बहुत पश्चाताप कर रहे हैं।

मंगल : अगर यह बात है तो चलो, मैंने ही पुलिस में शिकायत की थी और मैं ही अब समझौता कराता हूँ।

(सभी जाते हैं।)
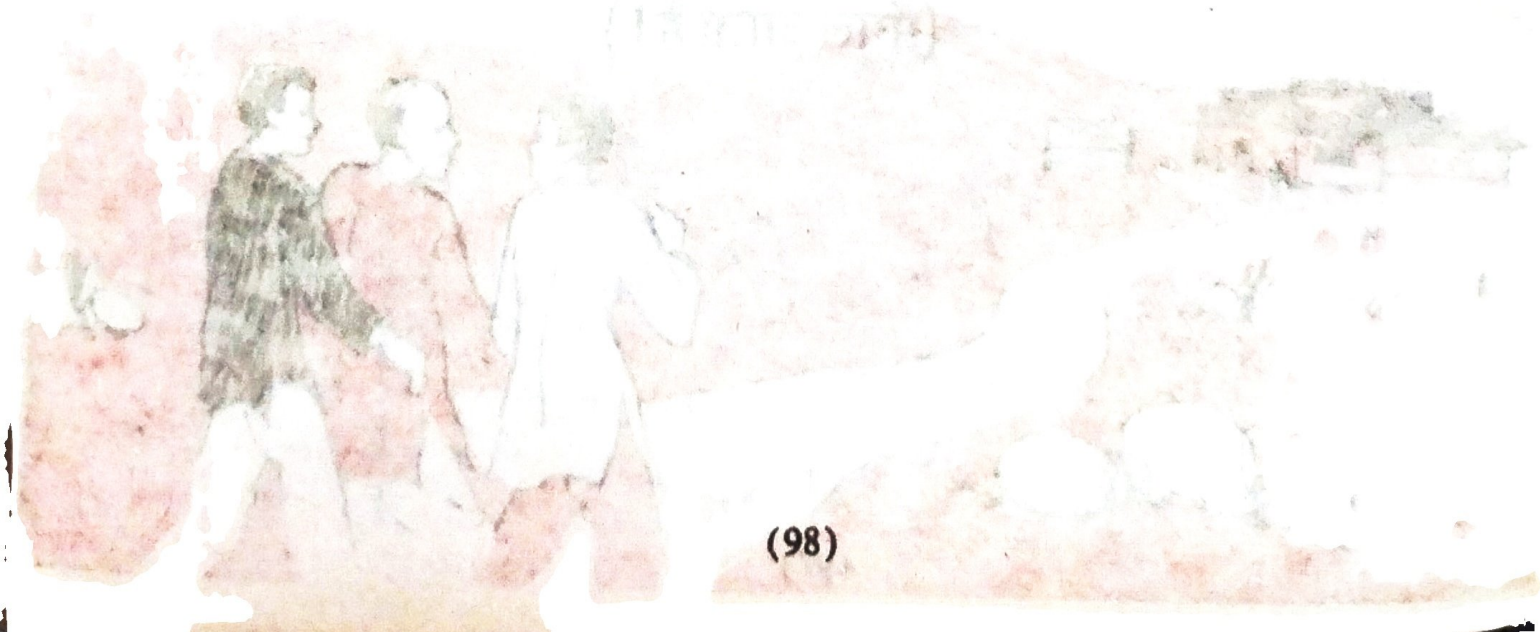
अभ्यास 21

1. ठीक शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए और फिर से लिखिए :

1. उत्तम स्वास्थ्य के लिए ---जरूरी है।(आराम /व्यायाम)
2. रानी लक्ष्मीबाई ---- की रानी थीं।(कानपुर /झाँसी)
3. बैंक से ऋण लेने पर --- कम पड़ता है।(ब्याज /अनाज)
4. धुआँरहित ---- अच्छा होता है।(चूल्हा /घर)
5. हरी ----खानेसे स्वास्थ्य अच्छा होता है।(दाल /सब्जी)
6. आल्हा ----- के सरदार थे।(कन्नौज /महोबा)

1. ______
2. ______
3. ______
4. ______
5. ______
6. ______

2. नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए और दो-दो बार लिखिए :

प्याज	____	____	सब्जी	____	____
सभ्य	____	____	सम्मान	____	____
शय्या	____	____	आल्हा	____	____
व्यायाम	____	____	ईश्वर	____	____
मनुष्य	____	____	पुस्तक	____	____
लक्ष्मी	____	____	निष्ठा	____	____

3.1 इन्हें भी जानिए :

(1) तौल की इकाई ग्राम है।

- 10 ग्राम को 1 डेकाग्राम कहते हैं।
- 100 ग्राम को 1 हेक्टोग्राम कहते हैं।
- 1000 ग्राम को 1 किलोग्राम कहते हैं।
- 100 किलोग्राम को 1 कुन्टल कहते हैं।
- 10 कुन्टल को एक टन कहते हैं।

(2) ग्राम से छोटी इकाइयाँ भी होती हैं।

- 1 ग्राम में 10 डेसीग्राम होते हैं।
- 1 डेसीग्राम में 10 सेंटीग्राम होते हैं।
- 1 सेंटीग्राम में 10 मिलीग्राम होते हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि 1 रुपये में 100 पैसे होते हैं। बाजार में खरीदारी करते समय इन बातों को ध्यान में रखा जा सकता है :

(1) जितने रुपए का एक कि०ग्रा०,उतने 10 पैसों का 100 ग्राम।

(2) जितने रुपए का 1 कि०ग्रा०,उतने पैसों का 10 ग्राम।

(3) जितने पैसों का 100 ग्राम,उसके दस गुने का 1 कि० ग्रा०।

(4) जितने पैसों का 10 ग्राम, उतने रुपयों का 1 कि०ग्रा०।

(5) जितने पैसों का 1 कि०ग्रा०, उतने रुपए का 1 कुन्टल।

(6) जितने रुपए का 1 कि०ग्रा०,उतने सौ रु० का 1 कुन्टल।

(7) जितने रुपए का एक कुन्टल, उतने पैसों का 1 कि०ग्रा०।

पाठ 22

संयुक्ताक्षर

(घुंडी हटाकर बनने वाले)

क्	क्यारी	मक्का	मक्खन	क्वार
	डाक्टर	कलक्टर	हेक्टेयर	हुक्का
	रक्त	रुक्का	नक्शा	रिक्शा
	अक्ल	शक्ल	चक्की	मधुमक्खी
फ्	दफ्तर	दफ्ती	रफ्तार	मुफ्त
	कोफ्ता	लिफ्ट सिंचाई	मुजफ्फरनगर	
	हफ्ता	फ्लू	फ्लिट	

अभ्यास 22

1. नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए और लिखिए :

मक्खन	______	______	मक्का	______	______
हेक्टेयर	______	______	चक्की	______	______
रफ्तार	______	______	मुफ्त	______	______
मधुमक्खी	______	______	दफ्ती	______	______

2. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और लिखिए :

1. बीमार होने पर डाक्टर की सलाह लेनी चाहिए।

____

2. मक्खियों से बीमारी फैलती है।

____

3. कलक्टर जिले का सबसे बड़ा हाकिम होता है।

____

4. पहाड़ों पर नदियों की रफ्तार तेज होती है।

____

3.1 इन्हें भी जानिए :

लम्बाई की नाप मीटर में होती है।

1000 मीटर का एक किलोमीटर होता है।

0 एक मीटर में 1000 सेण्टीमीटर होते हैं।

3.2 इन्हें भी समझिए :

(1) जितने रुपये का एक मीटर,उतने पैसों का 1 सेण्टीमीटर।

अब बताइए :

(1) मारकीन छः रुपये मीटर मिलता है। 2 मीटर 50 से.मी. का दाम कितना होगा ?

(2) खादी का दाम 15 रुपये मीटर है। 2 मीटर 10 से.मी.खादी कितने की मिलेगी ?

(3) टेरीकाट कपड़े का दाम 25 रुपए मीटर है। 3 मीटर 50 से.मी. कपड़े का दाम बताओ ?

पाठ 23

संयुक्ताक्षर

(हलन्त(्)लगाकर बनने वाले)

ट्	कट्टा	मिट्टी	चट्टान	चिट्ठी	ट्यूब वेल
	भट्ठी	मट्ठा	इकट्ठा	लट्ठा	गट्ठर
ठ्	पाठ्य-पुस्तक				
ड्	खड्ड	हड्डी	खड्ग	बुड्ढा	टिड्डी
	ड्योढ़ी	ड्योढ़ा	लड्डू	कबड्डी	
ढ्	धनाढ्य				
द्	द्वार	गद्दा	विद्या	विद्यालय	विद्वान
	उद्यम	उद्योग	उद्घाटन		
ह्	चिह्न	जिह्वा	बाह्य	विह्वल	
	असह्य	अपराह्न	आह्लाद		

आधा द को इस प्रकार भी लिखा जाता रहा है-

विद्यालय द्वार विद्वान

अभ्यास 23

1. नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए और लिखिए :

1. चट्‌टान ________ ट्‌यूब वेल ________
2. मिट्‌टी ________ खड्‌ड ________
3. गद्‌दा ________ असह्‌य ________

2. ठीक शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

1. बुंदेलखण्ड की ------- पथरीली है।(मिट्‌टी/जलवायु)
2. हड्‌डी टूट जाने पर ------- को दिखाएँ।(वकील/डाक्टर)
3. हर जगह ------- की पूजा होती है।(विद्वान/धनवार)
4. स्वास्थ्य के लिए ------- पहनना अच्छा होता है।(खद्‌दर/टेरीकाट)

3. नीचे एक पत्र लिखा है। इसे ध्यान से पढ़िए :

थाना गाँव,
मातटीला, ललितपुर
12-11-88

आदरणीय भाभी जी,

सादर नमस्ते

यहाँ सब कुशल है। आपकी कुशलता ईश्वर से नेक चाहती हूँ। आपको यह जानकर बहुत अचरज होगा कि यह पत्र मैं खुद लिख रही हूँ। गाँव में सयानी औरतों की पढ़ाई होती है। मैंने वहीं पढ़ा है। पढ़ाई के साथ-साथ घरेलू काम-काज की अनेक बातें भी सीखी हैं। अब मैं रानी लक्ष्मीबाई, आल्हा-ऊदल की गाथाएँ तथा अन्य पुस्तकें स्वयं पढ़ लेती हूँ। भाभी,आप कब आ रही हैं। पत्र का जवाब जल्द देना।

आपकी ननद
गंगा देवी

4. **अब आप एक पत्र अपने मामा को लिखिए, जिसमें अपनी बहिन की शादी तय करने के संबंध में उन्हें सलाह-मशविरे के लिए बुलाइए।**

___

___

___

___

___

___

इन्हें भी जानिए :

- **द्रव पदार्थों की नाप लीटर में होती है।**
- **1 लीटर में 1000 मिलीलीटर होते हैं।**

सूत्र : जितने रुपए लीटर, उतने दस पैसों का 100 मिलीलीटर।

अब बताइए :

(1) यदि दूध का दाम 4 रुपए लीटर है तो 100 मिलीलीटर दूध कितने में मिलेगा ?

___

पाठ 24

संयुक्ताक्षर

(र के संयोग से बनने वाले)

्र	प्रकाश	प्रभात	प्रचार	प्रयत्न	क्रय-विक्रय
	ग्राम	थ्रेशर	स्रोत	प्रदूषण	प्रजातंत्र
	द्रौपदी	ध्रुव	क्रूर	प्रौढ़	क्रांति
^	ट्रक	ट्रेन	ट्रॉली	ट्रैक्टर	ड्रम
	ड्रामा	ड्रेस	कंट्रोल	पेट्रोल	राष्ट्र
र्	कर्म	धर्म	सर्दी	बर्फ	पर्यटन
	ऊर्जा	पर्वत	नर्मदा	पर्यावरण	अर्थ
	अर्जुन	स्वर्ग	प्रार्थना	धैर्य	आर्य
	पर्व	तीर्थ	कीर्ति	सार्वजनिक	
श्र	श्रम	श्रमिक	श्री	श्रीमती	श्रीमान्
	परिश्रम	श्रवण	मिश्रण	श्रेष्ठ	श्रव्य-दृश्य

अभ्यास 24

1. पढ़िए और लिखिए :

प्रभात	______	______	ग्राम	______	______
ट्रैक्टर	______	______	ट्रक	______	______
पर्वत	______	______	नर्मदा	______	______
परिश्रम	______	______	श्रमिक	______	______

2. सप्ताह के सात दिन पढ़िए और लिखिए :

1. सोमवार	______	5. शुक्रवार	______
2. मंगलवार	______	6. शनिवार	______
3. बुधवार	______	7. रविवार	______
4. बृहस्पतिवार	______		

3. अंग्रेजी महीनों के नाम पढ़िए और लिखिए :

1. जनवरी	______	2. फरवरी	______
3. मार्च	______	4. अप्रैल	______
5. मई	______	6. जून	______
7. जुलाई	______	8. अगस्त	______
9. सितंबर	______	10. अक्टूबर	______
11. नवंबर	______	12. दिसंबर	______

4. पढ़िए और लिखिए :

1. हर महीने गर्भवती महिला की जाँच करानी चाहिए।
2. गृहवाटिका में हरी सब्जी उगाना लाभदायक है।
3. राष्ट्र की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए।
4. ट्रेन हो या बस, टिकट लेकर ही सफर करना चाहिए।
5. मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि थे।

1. ______________________________

2. ______________________________

3. ______________________________

4. ______________________________

5. ______________________________

5.

अपना पता लिखिए

नाम ______________

ग्राम/मुहल्ला ______________

डाकखाना ______________

जिला ______________

ऊर्जा

विक्रमपुर की पाठशाला में उस दिन गयाप्रसाद जी ने अनेक नई-नई बातें बताईं। वे बोले—मैं आज ऊर्जा के सम्बन्ध में चर्चा करूँगा।

अर्जुन को टोक-टाक करने की बहुत आदत है। कहने लगा—पहले यह तो बता दीजिए कि ऊर्जा क्या है? तब तो उसके संबंध में हमारे पल्ले कुछ पड़ेगा।

गयाप्रसाद जी ने कहा—अर्जुन, एक शब्द में तो ऊर्जा समझाई नहीं जा सकती है। वह दिखाई भी नहीं देती। हम बोझा उठाते हैं, लकड़ी जलाकर खाना पकाते हैं, बैल खेत जोतते या गाड़ी खींचते हैं, कोयले का इंजन ट्रेन चलाता है। हमारे अंदर, बैलों के अंदर, कोयले में, लकड़ी में, पेट्रोल या डीजल में ऊर्जा है, जिसके कारण ये काम होते हैं। बिजली में भी ऊर्जा है। इसी से कारखानों की बड़ी-बड़ी मशीनें चलती हैं, रोशनी होती है।

जहाँ से हमें यह ऊर्जा मिलती है, उन्हें हम ऊर्जा के स्रोत कहते हैं। ये स्रोत हमारे बनाए हुए नहीं हैं, कोयला, पेट्रोल, डीजल, प्रकृति में पहले से मौजूद हैं। लेकिन इतने नहीं कि इनका मनमाना उपयोग करते रहें। जिस रफ्तार से इनका उपयोग हो रहा है, यदि उसमें कमी नहीं की गई तो कुछ चीजें तो पचास-साठ वर्ष में ही समाप्त हो जाएँगी। हाँ, जल ऐसा स्रोत अवश्य है, जो समाप्त नहीं होता, लेकिन वह सब जगह तो है नहीं।

इसलिए अब लोगों का ध्यान ऊर्जा के ऐसे स्रोतों की ओर गया है, जो कभी समाप्त नहीं होंगे। इनमें एक तो है, सूर्य की ऊर्जा। इसका प्रयोग हम खाना पकाने के लिए ''सौर चूल्हा'' या ''सोलर कुकर'' में करते हैं। अनाज सुखाने, पानी गरम करने, बिजली बनाने तथा पानी का पंप चलाने में भी सौर-ऊर्जा काम आती है। कुछ स्थानों में इस ऊर्जा को बैट्री में भरकर बसें भी चलाई जाती हैं।

बायो गैस या गोबर गैस ऊर्जा का एक और साधन है, जिसका उपयोग काफी होने लगा है। दो-चार जानवर रखने वाला किसान बिना किसी विशेष लागत और परिश्रम के गोबर गैस संयंत्र लगा सकता है। सार्वजनिक रूप से भी गोबर गैस संयंत्र स्थापित किए जा सकते हैं। इससे मिलने वाली गैस से घरों में रोशनी होती है, सफाई और शीघ्रता से खाना पकता है तथा बहुत अच्छी खाद भी मिल जाती है। इस ऊर्जा का इस्तेमाल छोटी-छोटी मशीनें चलाने में भी होता है।
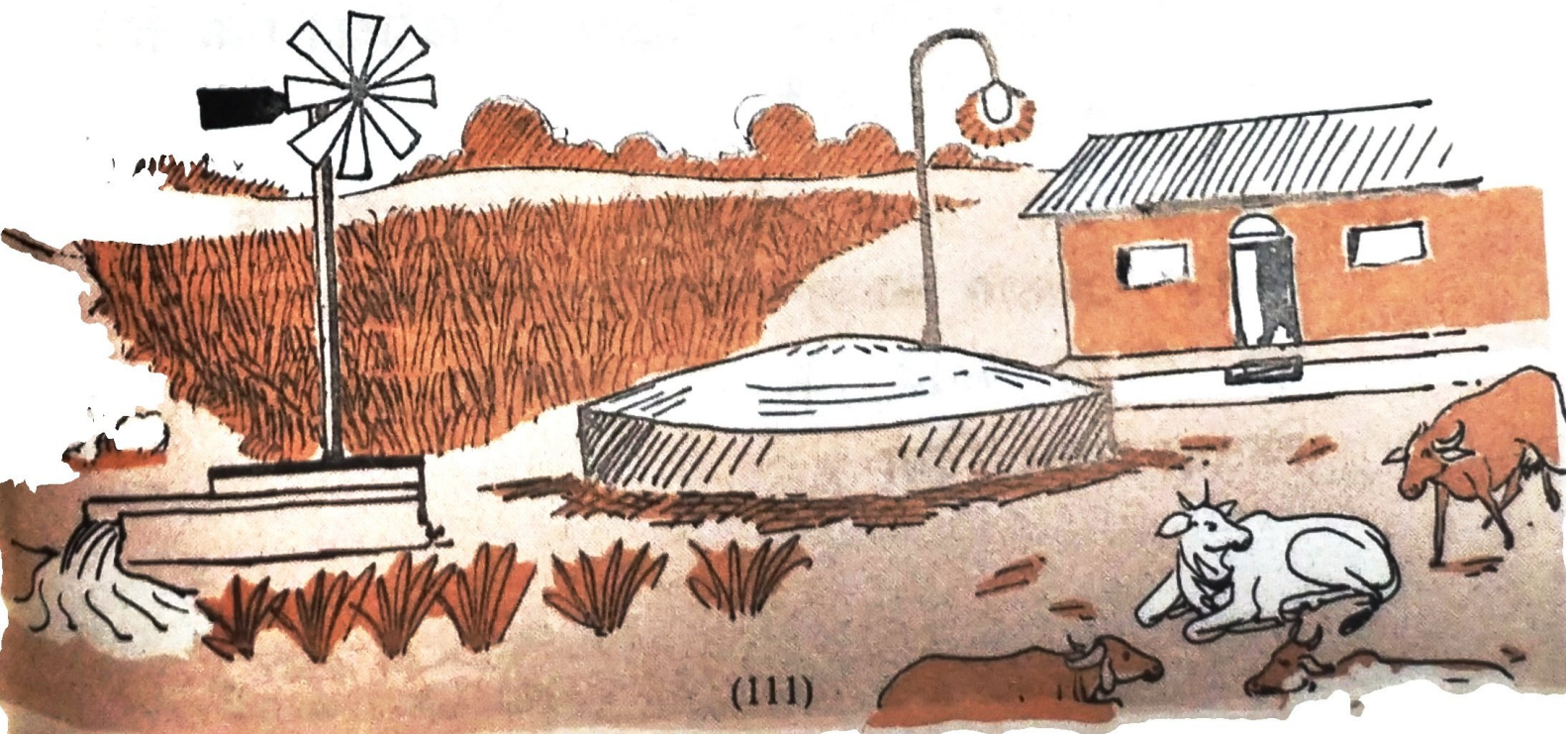
अब जगह-जगह हवा की ऊर्जा का भी प्रयोग होने लगा है। हवा के जोर से जब चक्की के पंख घूमते हैं तो उससे पानी निकालने का पंप चलने लगता है।

इतना सब बताने के बाद अंत में गयाप्रसाद जी बोले-गोबर गैस संयंत्र तो आप लोग आसानी से लगा सकते हैं। ब्लाक के दफ्तर में जाइए, वहाँ से पूरी जानकारी मिल जाएगी। इसके लिये सरकार से सहायता भी मिलती है।

---

1. हल कीजिए :

(1) रामनगर गाँव की आबादी इस समय 847 है। दस साल पहले 625 थी। इन सालों में आबादी कितनी बढ़ी ?

(2) हरी ने 5 बोरी यूरिया रु. 562.50 में खरीदा। एक बोरी यूरिया का मूल्य कितना है ?

(3) महादेव ने रु. 46.25 की चीनी, रु. 112.50 के कपड़े तथा रु. 228.70 का अन्य सामान खरीदा। उसने दूकानदार को सौ-सौ रुपये के चार नोट दिए। दूकानदार ने कितना वापस दिया ?

2. इनको भी जानिए, समझिए :

प्रतिशत :

प्रतिशत का मतलब है प्रति सैकड़ा अर्थात् एक सौ । 5 प्रतिशत का मतलब हुआ - सौ में पाँच । प्रतिशत (%) इस प्रकार लिखा जाता है । इसे एक उदाहरण से समझिए –

ब्याज 5 प्रतिशत या 5%

इसका अर्थ है कि 100 रु० कर्ज पर 5 रु० ब्याज।

जैसे बसंतलाल ने सहकारी बैंक से 500 रुपये उधार लिया।

साल के अन्त में 5% ब्याज देकर कर्ज चुकाया। बसंत लाल को 500 रु० मूलधन और 25 रुपये ब्याज, कुल 525 रु० देना पड़ा ?

अब बताइए :

1. किसन ने 6% ब्याज की दर से 300 रु० बैंक से उधार लिया । साल के अन्त में उसे कुल कितना रुपया वापस देना पड़ेगा ?
2. मंगल ने ट्यूब वेल लगाने के लिए 2000 रु० बैंक से उधार लिया। ब्याज की दर 10% है। साल के अंत में उसे कुल कितना ब्याज देना पड़ेगा ?

पाठ 26

गोस्वामी तुलसीदास

बुंदेलखंड कलम का भी धनी रहा है। अगर यहाँ के वीरों की तलवारों ने चमत्कार दिखाए हैं, तो यहाँ कुछ ऐसी विभूतियाँ भी हुई हैं, जिनकी लेखनी ने कमाल कर दिखाया है। ऐसी ही विभूतियों में गोस्वामी तुलसीदास जी भी थे।

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। तुलसी बचपन से ही बड़े होनहार थे।

उनके ज्ञान और विवेक के सभी कायल थे। एक कवि हुए हैं-रहीम। रहीम ने एक दोहा लिखा है। दोहा इस तरह है–

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहति अस होय।
गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सों सुत होय।।

इस दोहे से साफ जाहिर होता है कि हर कोई तुलसी जैसा बेटा चाहता था।

तुलसीदास राम के परम भक्त थे। उन्होंने 'रामचरित मानस' नामक ग्रंथ की रचना की। इसमें उन्होंने राम के आदर्श जीवन का चित्रण किया है, जो आज भी हमारी प्रेरणा का स्रोत है।

एक लोक कथा है कि ओरछा के महाराजा मधुकर शाह कृष्ण के भक्त थे। उनकी महारानी कुँवरि गणेशदे राम नाम की भक्त थीं। वे राम को ओरछा ले जाने के लिए अयोध्या पहुँची। उन्होंने वहाँ खूब तप किया। तपस्या करते-करते भी जब उन्हें आशा पूरी होती नहीं दिखाई दी, तो वे सरयू नदी में डूब जाने के लिए उतरीं। इस बीच भगवान राम की मूर्ति उनकी गोद में आ गई।

महारानी कुँवरि गणेशदे की खुशी का ठिकाना न रहा। उनकी आशा पूरी हुई। लेकिन वहाँ के साधुओं ने जोर दिया कि राम की वह मूर्ति अयोध्या में स्थापित की जाए। उस विवाद का फैसला तुलसीदास जी ने किया। उन्होंने फैसला दिया कि भगवान राम की मूर्ति ओरछा में ही स्थापित की जाए। महारानी मूर्ति लेकर तुरन्त ओरछा चल पड़ीं।

ओरछा पहुँचने पर उनका बहुत स्वागत हुआ। भगवान राम की मूर्ति महाराजा मधुकर शाह के महल में स्थापित

की गई। वह महल राम राजा के मंदिर के रूप में बदल गया। उस मंदिर में ताँबे के पत्र पर नीचे लिखी पँक्तियाँ अंकित हैं–

‘मधुकर शाह नरेश की,
रानी कुँवरि गनेश।
पुक्खन-पुक्खन लाई है,
ओरछे अवध-नरेश।।’

इस तरह बुंदेलखंड में जन्म लेने वाले संत तुलसीदास ने अपने राम की स्थापना भी बुंदेलखंड में कराई।

इनको जानिए और समझिए :

एक दिन = 24 घंटा
1 घंटा = 60 मिनट
1 मिनट = 60 सेकेण्ड

अब बताइए :

1. रेल गाड़ी की चाल 40 किलोमीटर प्रति घंटा है। 60 किलोमीटर जाने में कितने घंटे लगेंगे?

2. मोहन ने 20 बजकर 30 मिनट पर खेत जोतना शुरू किया और सवा बारह बजे समाप्त किया। बताओ, कुल कितना समय लगा?

3. एक बैलगाड़ी 4 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से जा रही है। 2 घंटे 30 मिनट में कितनी दूर जाएगी?

घड़ी देखना :

चित्र(1)

चित्र (2)

चित्र(3)

राम 10 बजे खेत से लौटता है।
देखो चित्र 1, इस घड़ी में ठीक 10 बजे हैं। छोटी सुई 10 पर और बड़ी ठीक 12 पर है।
अब चित्र 2 देखो। बड़ी 1, 2, 3, आदि पर होती हुई एक पूरा चक्कर लगाकर फिर 12 पर आ गयी है। इतनी ही देर में छोटी सुई 10 से आगे बढ़कर 11 पर पहुँच गई है। एक घंटा समय बीत गया और अब ठीक 11 बजे हैं।
चित्र 3 में 12 बजे हैं। छोटी सुई 1 घंटे में 11 से चलकर 12 पर पहुँच गई और बड़ी सुई एक और चक्कर लगाकर 12 पर आ गई है। अब ठीक 12 बजे हैं और दोनों सुइयाँ 12 पर हैं। अब बताओ, नीचे की घड़ियों में कितने बजे हैं:–

पाठ 27

बिटिया की चिट्ठी

पालर

26 अगस्त, 1986

भाभी जी,

नमस्ते !

माँ की चिट्ठी मिली। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप और छोटी मुन्नी दोनों स्वस्थ हैं। जब मैं पिछली बार आई थी तो आपसे बहुत सी बातें हुई थीं। एक इंजेक्शन तो आपने मेरे सामने ही लगवा लिया था।

मुझे पूरा विश्वास है कि डाक्टरनी जी ने जो बातें बताई थीं, वे आपको अच्छी तरह याद होंगी। बच्चों के खान-पान का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। इससे उनकी बढ़वार ठीक रहती है।

शुरू के तीन महीने तो बच्चों का काम माँ के दूध से चल जाता है, लेकिन चौथे महीने के साथ में पूरक आहार देना बहुत जरूरी है।इसमें दाल का पानी,चावल का माँड़,सागों का रस, पका केला अच्छी तरह मसलकर दिया जा सकता है। परंतु सफाई का ध्यान रखना चाहिए। बच्चे के पूरक आहार को धूल-मिट्टी से बचाना बहुत जरूरी है।

मुन्नी को कौन-कौन टीके कब लगने हैं, इसका तो आपको स्मरण होगा ही। पोलियो की खुराक पिलाना और

डी॰पी॰टी॰ तथा बी॰सी॰जी॰ का टीका लगवाना तो हर हालत में समय पर आरंभ कर ही देना है। मुन्नी अब तक इतनी बड़ी हो गई है कि उसे ये टीके लग जाने चाहिए। जब आप टीके लगवाने जाएँ तो यह पूछना न भूलिएगा कि अगला टीका कब लगेगा।

लल्लू ठीक है। बाबा, जीजी और भैया को चरण-स्पर्श कहना।

चिट्ठी का उत्तर जल्दी देना और घर का सब हाल लिखना। मुन्नी को हम दोनों का ढेर सा प्यार !

तुम्हारी ननद,
अंगूरी
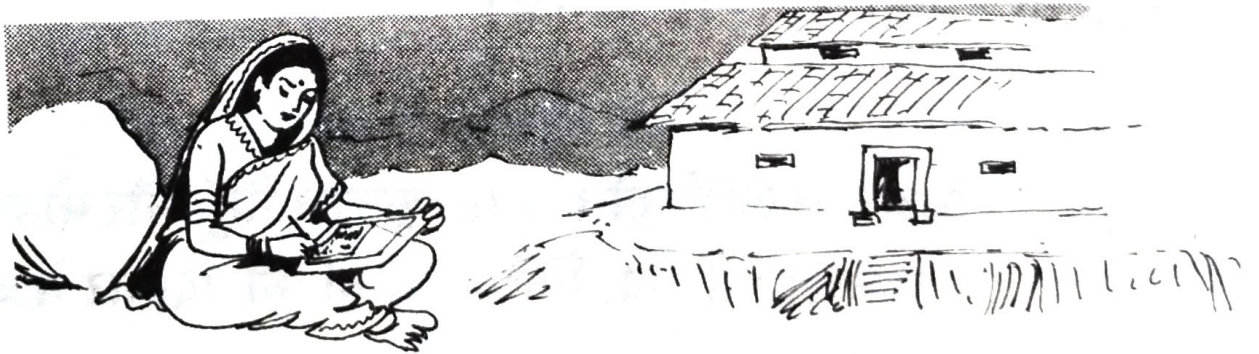
अनुपात :

अनुपात का मतलब है - हिस्सा या भाग ।

अनुपात को इस उदाहरण से समझें - एक किसान के पास कुल 24 बोरी अनाज है। 24 बोरियों में 8 बोरी चना है बाकी गेहूँ है। 24 में यदि 8 बोरी चना घटा दें 24 - 8 = 16 बोरी गेहूँ रह जाता है। इस बात को हम यों भी कह सकते हैं कि चना से गेहूँ की बोरियाँ 16 ÷ 8 = 2 गुनी हैं। (भाग देकर) अर्थात् गेहूँ और चने की बोरियों में 2:1 का अनुपात है।

अतः दो संख्याओं का अनुपात भाग द्वारा उनकी तुलना है। इससे ज्ञात होता है कि एक संख्या दूसरी संख्या की कितनी गुनी है या उसका कौन - सा भाग है।

अब बताओ :

1. रघुबीर ने अपने खेत में 16 कुन्तल गेहूँ और मोहन ने 8 कुन्तल गेहूँ पैदा किया। दोनों की पैदावार में क्या अनुपात है ?
2. राम की जर्सी गाय 20 लीटर दूध देती है और मंगल की गाय 5 लीटर दूध देती है। दोनों की गायों के दूध में क्या अनुपात है ?
3. संतराम एक माह में 1800 रुपए और सोहन 600 रुपए कमाता है। दोनों की आमदनी में क्या अनुपात है ?

1.3.

पाठ 28
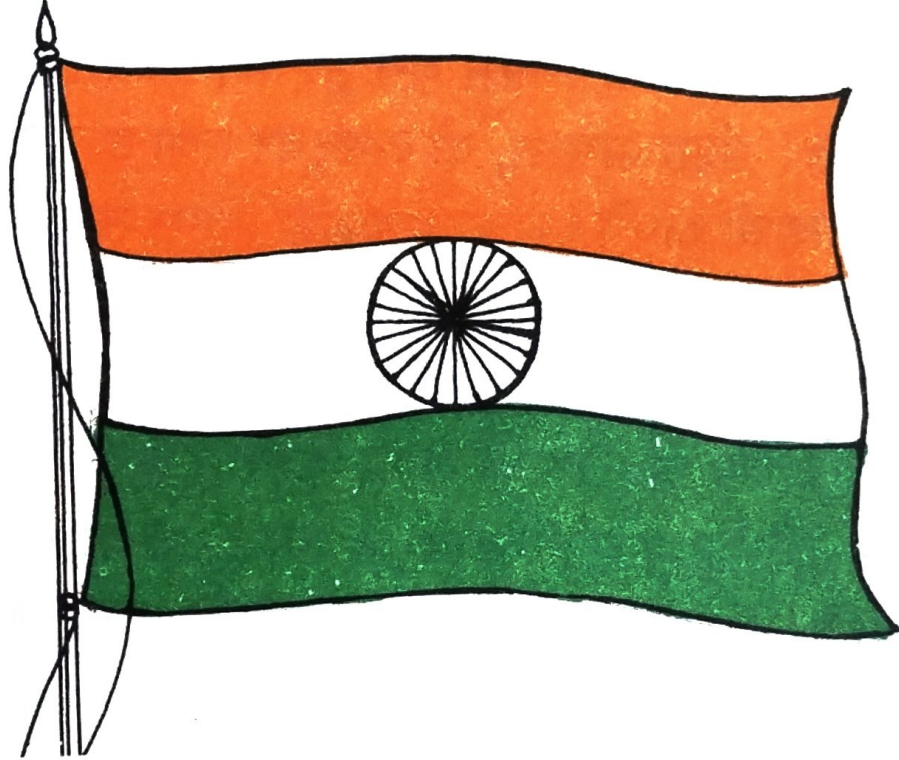
भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

हर देश की अपनी पहचान होती है। इस पहचान के कुछ चिह्न होते हैं। इन्हें राष्ट्रीय प्रतीक कहते हैं। भारत राष्ट्र के भी कुछ प्रतीक हैं।

राष्ट्रीय झंडा :

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना झंडा होता है। इसी को राष्ट्रध्वज कहते हैं। भारत का राष्ट्रध्वज तिरंगा है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई तीन और दो के अनुपात में होती है। सबसे ऊपर गहरा केसरिया रंग होता है। यह त्याग, बलिदान, वीरता और पुरुषार्थ की निशानी है। बीच की पट्टी सफेद होती है। इससे शांति और मैत्री झलकती है। इसी सफेद पट्टी के बीच में नीले रंग

का अशोक-चक्र होता है। इस चक्र में चौबीस तीलियाँ हैं। यह प्रगति की निशानी है। यह हमें बताता है कि बराबर आगे बढ़ते जाना है। कभी रुकना नहीं है। सबसे नीचे हरा रंग होता है। हरा रंग राष्ट्र की खुशहाली का चिह्न है।

झंडा फहराने के नियम बने हुए हैं। केसरिया रंग सदा ऊपर रहता है। पंद्रह अगस्त, दो अक्टूबर तथा छब्बीस जनवरी को सभी देशवासी अपने घरों पर यह झंडा फहरा सकते हैं। अन्य दिनों में झंडा केवल मुख्य-मुख्य दफ्तरों, मंत्रियों, राज्यपाल, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के निवासों पर नियमित रूप से फहराया जाता है। झंडे को सूर्योदय के समय फहराते हैं और सूर्यास्त के समय उतार लेते हैं। राष्ट्रीय शोक के समय झंडे को आधा झुका दिया जाता है। हर भारतीय का कर्त्तव्य है कि राष्ट्रध्वज को पूरा सम्मान दे।

राष्ट्रगान :

'जन-गण-मन' हमारा राष्ट्रगान है। इसे श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा था। जब राष्ट्रगान गाया जाता है या राष्ट्रगान की धुन बजाई जाती है, सब लोग खड़े होकर इसका सम्मान करते हैं। राष्ट्रगान सभी लोग सावधान मुद्रा में खड़े होकर मिलकर गाते हैं।

श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी के लिखे गीत 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया गया है।

राजचिह्नः

अशोक के लाट से ली गई शेरों की मूर्ति भारत का राज-चिह्न है। इसमें चार शेर हैं, पर चित्र में तीन ही दिखाई देते हैं।

इसी कारण इसे त्रिमूर्ति भी कहते हैं। इस त्रिमूर्ति के नीचे घोड़े और बैल का चित्र है। घोड़े और बैल के बीच एक चक्र बना है। इसके नीचे लिखा है–'सत्यमेव जयते।' भारत सरकार के सभी कागज-पत्रों पर यह राजचिह्न छपा रहता है।

राष्ट्रीय पशु :

बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है। बाघ का स्वस्थ-सजीला शरीर, उसकी चुस्ती-फुर्ती, उसकी शाही चाल, उसकी दहाड़ देखते और सुनते बनती है। बाघ को मारना कानूनन अपराध है।

राष्ट्रीय पक्षी :

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है। यह अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। इस पक्षी को भी पकड़ना या मारना कानूनन अपराध है।

हमें अपने इन राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना चाहिए।

पाठ 29

हमारा देश

हमारे देश का नाम भारत है। इसे हिंदुस्तान भी कहते हैं। भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत है। इसके दक्षिण में हिंद महासागर है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, बर्मा और बाँगला देश है। पश्चिम में अरब सागर और पाकिस्तान है।

हमारा देश उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। पूर्व से पश्चिम तक इसका विस्तार अरुणाचल प्रदेश से लेकर कच्छ तक है।

भारत भूमि को अनेक नदियों ने सीचा है। इनमें प्रमुख हैं- गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, महानदी गोदावरी, कृष्णा और कावेरी। देश में जहाँ एक ओर लहलहाते मैदान हैं, वहीं दूसरी ओर बालू भरे रेगिस्तान भी हैं।

भारत के मौसम की अपनी विशेषताएँ हैं। यहाँ प्रचंड गर्मी भी पड़ती है, मूसलाधार पानी भी बरसता है और कड़ाके की सर्दी भी पड़ती है।

हमारे देश में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। यहाँ राम हुए हैं, कृष्ण हुए हैं। महावीर हुए हैं, गौतम बुद्ध हुए हैं। यहीं अशोक और अकबर जैसे प्रतापी सम्राट हुए हैं। कबीर, सूर,

तुलसी, मीरा, रसखान जैसे संतों, भक्तों और कवियों की वाणी यहाँ आज भी गूँजती है।

भारत में कई प्रदेश हैं। यहाँ विभिन्न धर्मों को मानने वाले तथा विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोग रहते हैं। लोगों के पहनावे भी अलग-अलग तरह के हैं। खान-पान और रीति-रिवाजों में भी अंतर दिखाई देता है। किंतु यह भिन्नता केवल ऊपरी है। वास्तव में सब भारतीय हैं, एक ही राष्ट्र के निवासी हैं। हम सब भारत माता की संतान हैं।

हमें अपने इस महान देश पर गर्व है।

आपने सीख लिया :

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ

ा ि ी ु ू ृ े ै

ओ औ अं अः

ो ौ ं ः

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड(ड़) ढ(ढ़) ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ

श्र

गिनती

अं – अंतर्राष्ट्रीय अंक

हिं – हिंदी अंक

अं	हिं	अं	हिं	अं	हिं	अं	हिं	अं	हिं
1	१	21	२१	41	४१	61	६१	81	८१
2	२	22	२२	42	४२	62	६२	82	८२
3	३	23	२३	43	४३	63	६३	83	८३
4	४	24	२४	44	४४	64	६४	84	८४
5	५	25	२५	45	४५	65	६५	85	८५
6	६	26	२६	46	४६	66	६६	86	८६
7	७	27	२७	47	४७	67	६७	87	८७
8	८	28	२८	48	४८	68	६८	88	८८
9	९	29	२९	49	४९	69	६९	89	८९
10	१०	30	३०	50	५०	70	७०	90	९०
11	११	31	३१	51	५१	71	७१	91	९१
12	१२	32	३२	52	५२	72	७२	92	९२
13	१३	33	३३	53	५३	73	७३	93	९३
14	१४	34	३४	54	५४	74	७४	94	९४
15	१५	35	३५	55	५५	75	७५	95	९५
16	१६	36	३६	56	५६	76	७६	96	९६
17	१७	37	३७	57	५७	77	७७	97	९७
18	१८	38	३८	58	५८	78	७८	98	९८
19	१९	39	३९	59	५९	79	७९	99	९९
20	२०	40	४०	60	६०	80	८०	100	१००

राष्ट्रगान

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ उत्कल बंग,
विन्ध्य हिमांचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे॥